द्वितीय अध्याय

शेखर ोशी की कहानियों का कथ्य और शिल्प

2.1 कथ्य

2.1.1 मध्यवर्ग

2.1.2 पहाड़ ीवन पर केंद्रित कहानियाँ

2.1.3 औद्योगिक परिवेश की कहानियाँ

2.1.4 अकेलापन

2.1.5 बदलते ीवन मूल्य

2.1.6 आधुनिक समा ा

2.2 शिल्प

2.2.1 शब्द प्रयोग

2.2.1.1 मुहावरे एवं कहावतों का प्रयोग

2.2.1.2 ि त्रात्मक भाषा

2.2.1.3 विषयानुकूल एवं पात्रानुकूल भाषा

2.2.1.4 प्रतीकात्मक भाषा

2.2.1.5 व्यंग्यात्मक भाषा

2.2.1.6 भावात्मक भाषा

2.2.2 शैली

2.2.2.1 वर्णनात्मक शैली

2.2.2.2 आत्मकथात्मक शैली

2.2.2.3 संवादात्मक शैली

2.2.2.4 स्मृतिपरक शैली

2.2.2.5 मनोविश्लेषणात्मक शैली

2.2.2.6 मिश्रित शैली

2.2.3 शैलीगत विशेषताएँ

2.2.3.1 भावात्मकता

2.2.3.2 आलंकारिकता

2.2.3.3 प्रतीकात्मकता

2.2.3.4 प्रवाहात्मकता

2.2.3.5 व्यंग्यात्मकता

2.2.3.6 आं ालिकता

2.2.3.7 रो ाकता

द्वितीय अध्याय

शेखर ोशी की कहानियों का कथ्य और शिल्प

2.1 कथ्य

शेखर ोशी 'नई कहानी' के प्रमुख कहानीकारों में से एक हैं। उन्होंने 1954-56 के आसपास लिखना शुरू किया था। स्वतंत्रता हमारे लेखकों के स्वपनों की पूर्ति करने में असफल रही। इसी कारण 'नई कहानी' के यादातर कहानीकार निराश होकर अपनी कहानियों की विषय-वस्तु के रूप में संत्रास, कुंठा, हताशा, एकाकीपन तथा सेक्स को अपनाया है। इन्हीं विषयों की कथा-भूमि को कहानीकार पूरी प्रमाणिकता और संवेदनशीलता के साथ 'नई कहानी' को स्थापित कर पाने में सफल हुए। लेकिन उस समय भी दबे-पिछड़े, संघर्षरत लोगों की ीवन स्थितियों के यथार्थ ित्रण को लेकर कुछ कहानीकार सक्रीय थे ैसे मार्कण्डेय, अमरकांत, भैरव प्रसाद गुप्त, शेखर ोशी आदि। हिंदी कहानी में पिछले ार दशकों से भी यादा समय से प्रेम ंद की पारदर्शी यथार्थ की परंपरा में लिखने वालों में शेखर ोशी का स्थान शीर्ष है।

शेखर ोशी अपने नि ी अनुभवों को कथा-वस्तु के रूप में अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। उनकी पहली कहानी 'दा यु' वैसी ही उप ा है। उन्होंने समा ा के प्रमुख वर्ग मध्यवर्ग को अपनी कहानियों के कथ्य के रूप में

स्वीकारा है। उसी प्रकार अपेन कारखाने के अनुभवों, पहाड़ी ीवन, बदलते ीवन मूल्यों एवं अकेलापन और आधुनिकता बोध को लेकर भी उनकी कहानियों में विस्तार से ि ात्रित किया गया है।

समकालीन ीवन की सामा ि ाक परिस्थितियाँ शेखर ोशी के र ाना-संसार को प्रभावित करती हैं। इसीलिए उन्होंने अपनी कहानियों में सामा ि ाक समस्याओं ैसे वर्ग-भेद, वर्ण-भेद, आर्थिक संकट, बेरो ागारी, ऊँ ा-नी ा की भावना, म ादूर-संघर्ष आदि को प्रमुख स्थान दिया। उनकी कहानियों में रू ि वादी परंपरा के खिलाफ विद्रोह की भावना व्यक्त होती है।

2.1.1 मध्यवर्ग

स्वातंत्र्योत्तर काल में धन अथवा अर्थ का बड़ा महत्व है। उसी आर्थिक स्थिति के आधार पर समा ा मुख्य रूप से तीन वर्गों में विभक्त हुआ था वे हैं- उ ा वर्ग, मध्यवर्ग और निम्न वर्ग। इन तीनों वर्गों में उ ा वर्ग तथा निम्न वर्ग की तुलना में मध्यवर्ग की भूमिका प्रमुख है। वास्तव में इस मध्यवर्ग का उदय शिक्षा के द्वारा हुआ है। "सामा ि ाक और आर्थिक संघर्ष की स्थिति में शिक्षित मध्यवर्ग सबसे अधिक क्षुब्धावस्था में था। अतः नैतिक मूल्यों एवं ीवन के आदर्शों के प्रति सब से अधिक आस्थाहीन यही वर्ग था।"[1]

मध्यवर्ग एक विशेष प्रकार का ीवन बिताने का आदि है। यह वर्ग आर्थिक अभाव के कारण ीवन में उल ाते हुए उ ा वर्ग के समकक्ष में पहुँ ाने की महत्वाकांक्षा रखता है। ाब यह महत्वाकांक्षा पूरी नहीं हो पाती तब वह निराशा एवं कुंठा से ग्रस्त हो ाता है।

स्वतंत्रता से पूर्व नारी की तुलना में स्वातंत्र्योत्तर नारी के अधिकारों में परिवर्तन आ गया। शिक्षा के प्रभाव से नारी अपने अधिकारों की माँग करने

[1] हिंदी नाटक की भूमिका मध्यवर्ग के संदर्भ में, मूल ंद गौतम-पृ.52

लगी और उसमें स ागता आई। मध्यवर्गीय पुरुष की तुलना में नारी अधिक स ाग हुई और वह निरंतर उ ा वर्ग के समकक्ष पहुँ ाने की महत्वाकांक्षा रखती है। उसके साथ-साथ प्रदर्शन की प्रवृत्ति भी उसमें यादा है। मध्यवर्ग की सर्वप्रथम कम ोरी आर्थिक अभाव ो है वह शेखर ोशी की सभी कहानियों में देखने को मिलती है।

किसी भी व्यक्ति का सामा ि ाक गौरव, आदान-प्रदान सभी उस व्यक्ति की आर्थिक स्थिति पर निर्भर होता है। परिवार, समा ा, रा ानीति, धर्म, साहित्य का विकास अर्थ पर ही आधारित है। एक शब्द में कहना है तो अर्थ ही वह शक्ति है ो सारी दुनिया को अपनी मुट्ठी में बंद कर सकती है। मध्यवर्ग के लोग अर्थाभाव के कारण असंतुष्ट से आक्रांत होकर विकसित नहीं हो पा रहे हैं। शिक्षित होने के बाद भी बेकारी से उत्पन्न समस्याओं का सामना भी इसी वर्ग को सबसे यादा करना पड़ता है।

'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ' शीर्षक कहानी का वीरेंद्र नौकरी के अभाव में आत्मनिर्भर होने के लिए अंत तक संघर्ष करता रहा। वह नौकरी की प्रतीक्षा में हर रो ा डाकिया द्वारा लाये गये पत्र का इंत ाार करता रहता। वीरेंद्र का पिता उसे कई प्रकार के अखबारों में 'वांटेड' कालम देखने के लिए कहता है। वीरेंद्र को कई प्रकार के लोगों से कई साक्षात्कारों का सामना करना पड़ा। उसे "शारीरिक व्यक्तित्व के कारण अफसर न बन पाने की ि ंता नहीं, वरन यह सो ाकर कि कहीं पिता ी अपनी दवाएँ बंद कर वास्तव में मेरे लिए अंडे-मक्खन माँगना आरंभ न कर दे।"[2]

[2] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.25

वीरेंद्र के इस सो ा के पीछे मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक परिस्थिति का पता ालता है। अगर अंडे-मक्खन ैसी छोटी-सी ाी ों लानी हो तो उन्हें कहीं पर किसी ीज़ को त्याग देना पड़ता है।

आर्थिक अभाव के कारण वीरेंद्र अपने मित्रों से नहीं मिल पाता क्योंकि ाब सभी मित्र मिलते हैं तो किसी-न-किसी बहाने पार्टी मनाते थे। उनकी ओर से अंतिम पार्टी यूनिवर्सिटी कान्वोकेशन के दिन हुई थी। बाद में वह ाब भी गया उन लोगों का अतिथि बनकर ही गया था। अपनी इस आर्थिक विषमता के कारण वह धीरे-धीरे ऐसे अवसरों पर कोई बहाना बनाकर उनसे अलग होने लगा।

हमारा यह समा ा अर्थ केंद्रित समा ा है। अर्थ के आधार पर ही मनुष्य समा ा में अपना संबंध ोड़ता है। ाब वीरेंद्र पी.सी.एस. की लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण होता है तब शैली की माँ वीरेंद्र से अपनी बेटी का विवाह करने के लिए सो ाती है। लेकिन ाब यह स्वप्न, स्वप्न ही रह गया तब शैली का विवाह किसी और से निश ाय कर लेती है। इस से यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक अभाव एक ऐसी समस्या है ि ास के आगे मित्रता या रिश्ता, प्रेम किसी का कोई महत्व नहीं है। इसी समस्या के कारण वीरेंद्र का सारा ीवन संघर्षमय हो ाता है।

आर्थिक अभाव मध्यवर्गीय लोगों के लिए एक अभिशाप की तरह है। वह इस समस्या से बाहर निकलने के लिए प्रयत्न करता रहता है और साथ में इस समस्या को छुपाना भी ाहता है। इस प्रयत्न में वह निरंतर संघर्ष करता रहता है। यह समस्या मध्यवर्ग में महीने के अंतिम सप्ताह में आती है।

शेखर ोशी की 'डरे हुए' शीर्षक कहानी इसी समस्या पर लिखी गयी है। इस कहानी में कमला और उसका पति महीने के अंतिम सप्ताह की इस

समस्या को हल करने के लिए प्रयत्न करते रहते हैं। कमला अपनी पड़ोसी से भी सहायता नहीं लेना ाहती है। वह इस स्थिति को छुपाने के लिए अपने पति को बाहर ाते समय निरर्थक कुछ ले लेने को कहती है। वह दूसरों से कुछ पूछना भी नहीं ाहती इसीलिए वह कहती है-"नहीं ी, बड़े शहर में कोई किसी को नहीं पूछता। हमें आए दो महीने हो गए और ऊपर वाली ने एक दिन आकर पूछा भी नहीं। सब अपने आप में व्यस्त हैं।"[3] कमला इस समस्या से बाहर निकलने के लिए पुरानी पत्रिकाओं को बे ाने के लिए सो ाती है तो उसका पति कमला के कानों की बालियों को बे ाकर इस समस्या से बाहर निकलना ाहता है। दोनों इस समस्या से अपने बेटे को दूर रखना ाहते हैं। कमला कहती है कि-"वह आ रहा है। उसके सामने कुछ न कहना। दो ही दिन की तो बात है। मैं किसी तरह बहला लूँगी। िंता करने के लिए हम दोनों ही बहुत हैं। उस पर न ाने कैसा असर पड़े।"[4] कमला अपने बेटे के सवालों से डरती है। इतना प्रयत्न करने पर भी अंतिम दिन कमला को अपने बेटे के सामने अपनी असमर्थता स्वीकार करनी ही पड़ी। उसके प्रश्नों के उत्तर में उसे स्थिति पूरी तरह स्पष्ट कर देनी पड़ी थी। कमला के इस संघर्ष में वह हार गई। मगर आश ार्य की बात यह है कि उसका बेटा रोया िल्लाया नहीं। इससे यह स्पष्ट होता है कि मध्यवर्ग के इस आर्थिक अभाव से ब ो भी अछूते नहीं रह पाते, बालक भी इस संघर्ष में परोक्ष रूप से भाग लेते हैं। आर्थिक अभाव की इस समस्या को ानकर वह गुमसुम सा रह ाता है।

'ब ो का सपना' कहानी में एक मध्यवर्गीय पिता अपनी बेटी के मासूम ोहरे पर सुखद आश ार्य की ामक देखना ाहता है। इसीलिए वह बेटी की इ िछत वस्तु ानकर उसे किस प्रकार भेंट देता है उसकी कल्पना इस कहानी में

[3] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.51
[4] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.52

है-"मैं उसे उस उपहार का पहला अक्षर सूत्र-रूप में बता दूँगा और फिर आकार-प्रकार कहीं-न-कहीं उसकी कल्पना सही उत्तर खो ा लेगी और तब मैं अपने ोले से निकालकर उपहार उसे दे दूँगा और किलककर उसे ले लेगी।"[5] मगर उसकी यह कल्पना सत्य के रूप में बदल नहीं पायी, क्योंकि वह ि ास ोली में अन्य ीज़ों के साथ उपहार भी ला रहा है, वह देने में ही छूट गया था। यह ानकर वह घबराता है। उनका यह घबराना स्वाभाविक है क्योंकि आर्थिक दबाव की इस परिस्थिति में ीज़ों के छूटना ोट की दर्द से कहीं कम नहीं है। वह पैसों की ब ात के लिए पुरानी पैंट को काटकर बनायी गयी ोली का उपयोग करता है और कैंटीन के लाईन में बहुत देर तक खड़े होकर आवश्यक ीज़ों के साथ-साथ टाफी का पैकेट भी लेता है ि ासे वह उपहार के रूप में देना ाहता है। कोई यह सो ा सकता है कि क्या टाफी का पैकेट भी असामान्य वस्तु है? लेकिन वह स्वयं कहता है-"मेरी ैसी स्थिति में उसके लिए यह मामूली ीज़ भी लगभग असामान्य ही थी।"[6] इस से उस परिवार की आर्थिक परिस्थिति का पता ालता है। मध्यवर्गीय समा ा के लोगों के सामने अर्थाभाव के कारण परिवार के सदस्यों की ओर उनकी आवश्यकताओं की ओर भी सही ंग से ध्यान न दे पाने की विवशता होती है। उस मध्यवर्गीय परिवार की ीज़ों का छूट ाने का संबंध प्लाटफार्म के छोकरों से रखते हैं। अगले दिन ाब पिता काम से वापस आता है तब उनके द्वारा छोकरों का नहा-धोकर साफ-सुथरे बने हुए-हीरों का विषय सुनती है। वह प्रसन्न और संतुष्ट होती है। उसी समय पिता को अपनी बेटी के ोहरे पर सुखद आश ार्य की ामक देखने की इ ा पूरी होती है।

---

[5] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.9

[6] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.9

'सहयात्री' कहानी का अग्रवाल एक मध्यवर्गीय व्यक्ति है। एक व्यक्ति को ि ान स्थितियों के आधार पर मध्यवर्गीय व्यक्ति कहा ाता है, वे सारे गुण इसमें हैं ैसे प्रदर्शन की प्रवृत्ति और उ ा वर्ग में सम्मिलित होने की महत्वाकांक्षा। इसी प्रदर्शन प्रवृत्ति के कारण वह रेल यात्रा में सहयात्रियों को टैक्सी खराब होने का विषय बताकर उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करना ाहता है। इसी क्रम में वह खुद के बारे में बहुत कुछ बोल देता है कि वह लखनऊ के सेक्रेटेरियेट में काम करता है। इसी काम के सिलसिले में वह पहाड़ी इलाके में आया था।

वह लोअर क्लास के ि ास कंपार्टमेंट में यात्रा कर रहा है उस में अगले स्टेशन पर किसी को नहीं आने देता। वह कंपार्टमेंट के दरवा ो को बंद कर देता है। ऊपर से वह कहता है-"बड़े भेड ाल वाले लोग होते हैं साहब ये तीर्थयात्री भी। यह नहीं सो ाते भई कि एक ागह सब नहीं बैठ सकते तो दो-दो ार- ार की टोली में इधर-उधर बैठ ायें। नहीं साहब, हाँ एक ायगा वहीं सब घुसेंगे।"[7] इस प्रकार वह बद्री-केदार से लौटकर आनेवाले यात्रियों के प्रति अपना मत प्रकट करता है। बाद में हर नये स्टेशन पर गाड़ी के पहुँ ाने से पहले वह अगल-बगल बैठे हुए यात्रियों को ोतावनी दे देते थे-"यहाँ सम्हलकर रहिए साहब। यह दूध वालों के लौटने का टाइम हो रहा है। भाई लोग खिड़कियों से डिब्बे अंदर फेंक देते हैं। भाई साहब! ारा यह किवाड़ बंद कर लीि ाएगा, यहाँ आगरा वाली गाड़ी के पैसें ार इसमें ा.ते हैं।"[8] इस प्रकार अग्रवाल ी अपने डिब्बे में किसी को नहीं आने देता। एक गरीब किसान अपने ब ो को ट्रेंन पर बिठाने की अनुमति माँगता है तो अग्रवाल उन्हें उसी ागह पर पैर सिकोड़कर बैठने के लिए कहता है। अग्रवाल के व्यवहार से पता

[7] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.107
[8] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.109

ालता है कि वह निम्न वर्ग के लोगों से दूर रहना ाहता है और उन्हें उन लोगों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है। ाो व्यक्ति दूसरों की सहायता नहीं करना ाहता है, वही व्यक्ति एक नवयुवक को अपने उस कम्पार्टमेंट में आने को आमंत्रित करता है क्योंकि अग्रवाल उस नवयुवक को उ ावर्गीय व्यक्ति सम ाता है। उ ा वर्ग में सम्मिलित होने की महत्वाकांक्षा से वह उस नवयुवक की सेवा करता है, उसे अपने बर्थ के बिस्तर पर सोने के लिए ागह देता है तथा स्वयं गुडमुड़कर ट्रंक पर सोता है। इस कहानी से एक मध्यवर्गीय व्यक्ति का ारित्र स्पष्ट होता है।

'नेकलेस' शीर्षक कहानी में एक मध्यवर्गीय परिवार के लड़के का विवाह बिना माँ-बाप के आश्रम में रहनेवाली लड़की के साथ निश ाय होता है। उसका ुनाव केवल उसके व्यक्तिगत गुणों के कारण होता है। आर्थिक अभाव के कारण ससुराल वाले नई बहू को कुछ साधारण आभूषण ही बनवा पाते हैं। ैसे-हाथ-कान के ोवर, अंगूठी। गले का कोई ोवर न होने के कारण लड़का तथा ससुर भी ि ांतित हैं। अब इस परिवारवालों के सामने यह एक समस्या बन गयी है। इस समस्या से बाहर निकलने के लिए परिवारवाले यह तय करते हैं कि-"फिलहाल काम ालाने के लिए किसी सगे-संबंधी का ोवर लेकर यह कमी पूरी कर ली ाए।"[9] यह बात कोई नई या असामान्य नहीं है। अक्सर मध्यवर्गीय परिवारों में इस प्रकार का लेन-देन, उधार-बदले ालता रहता है। यही इस कहानी में भी होता है। नई बहु को अन्य सभी आभूषणों के अतिरिक्त वह ामकीला नेक्लेस बहुत पसंद आता है। बाद में वह सामान्य-सा नेकलेस भी उनका अपना न होने का स ा ानकर आँसू बहाने लगती है। इस समस्या का समाधान ूँ. ते हुए परिवारवाले मौन हैं। इस मौन को तोड़ते हुए ब ो लड़ते-

[9] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.

ागड़ते वहाँ घुस ाते हैं। उनके लड़ने का विषय भी खेल में नेक्लेस ही है। इस कहानी के समानांतर में ब ों की कहानी ालती है। उनके खेल में भी यही नेक्लेस की समस्या है ि सका समाधान तरु करता है। "गुड़िया में लियाकत होगी तो वह अपने लिए एक नहीं, दो-दो नेक्लेस ुटा लेगी।" तरु के इस वाक्य से सभी संतुष्ट होते हैं और नई बहू भी हल्की मुस्कान से नेक्लेस लौटाती है। इस प्रकार पूरी कहानी में आर्थिक अभाव और महत्वाकांक्षा के कारण कुंठा और निराशा देखने को मिलती है। नेक्लेस एक मध्यवर्गीय नारी के मनोविज्ञान को सशक्त रूप में व्यक्त करनेवाली कहानी है।

'गाईड' एक मध्यवर्गीय व्यक्ति के यात्रा की कहानी है। यह यात्रा दुनियादारी आदमी शर्मा ी के निर्देशन में होती है। वे लोग अपने छोटे-से-छोटे विषय पर सतर्क रहते हैं। अंत में केलेवाला उन्हें एक नकली नोट पकड़ा देते हैं तो वापस आते समय उस नोट को शर्मा ी कुली के हाथ में रख देता है। इस कहानी में मध्यवर्ग के लोग किस प्रकार छोटी उपलब्धियों के लिए भी ओछी से ओछी तथा अमानवीय हरकतें करते हैं सह ा ही इस कहानी में हमें देखने को मिलता है।

'प्रतीक्षित' कहानी में हम मध्यवर्गीय नारी के मनोविज्ञान को देख सकते हैं। इस कहानी में रमेश दा केफों में काम करनेवाले म ादूरों को सहायता करते हुए उनके आंदोलनों में भाग लेता है ि सका विरोध उसकी पत्नी मन्नो से किया ाता है। वह अपने परिवार तक ही सीमित रहना ाहती है। मन्नो अपने पति के साथ ही यादा समय बिताना ाहती है। इसी कारण से उन दोनों के बी ा में ागड़ा होता है। रमेश में बदलाव न आने के कारण वह अंत तक खुश नहीं रहती। इस कहानी के द्वारा शेखर ोशी मध्यवर्गीय नारी के मनोविज्ञान को कुशलता पूर्वक प्रस्तुत किया है।

'बंद दरवा ोः खुली खिड़कियाँ' कहानी की सरो ा एक मध्यवर्गीय नारी है। उसमें उ ा वर्ग में मिलने की महत्वाकांक्षा के साथ-साथ प्रदर्शन प्रवृत्ति भी है। इसीलिए उसके घर आए हुए दोस्त के सामने निम्न वर्ग के पड़ोसियों के व्यवहार के प्रति अपना गुस्सा प्रकट करते हुए उ ा वर्ग के 'सिविल लाइन्स' कोठियों में ट्राई करने की बात कहती है। वह अपनी बेटी मिनी को बड़ी गाइडेंस के साथ अ छे मैनर्स सिखाती है। उसके साथ-साथ वह मिनी को महादेवी वर्मा, पंत और ब ान ैसे हिंदी के प्रमुख कवियों के गीत सिखाती है। उनका प्रदर्शन ाब वह अपनी दोस्त के सामने करने के लिए कहती है तो मिनी गालियाँ भरा गाना गाने लगती है। सरो ा गुस्से में आकर थप्पड़ मारती है। अंत में वह अपने ूठे प्रदर्शन में असफल होने के कारण दुखी रह ाती है।

मानव ीवन में संस्कार का बड़ा महत्व है। इस के आधार पर ही हम मनुष्य को द र्ा करा सकते हैं। यादातर लोगों का कहना है कि मध्यवर्गीय लोगों में निम्न और उ ा वर्ग की तुलना में संस्कार यादा पाये ाते हैं। इन्हीं मध्यवर्गीय लोगों के संस्कारों को प्रस्तुत करनेवाली कहानी 'पुराना घर' है। इस कहानी में उ ा वर्ग के डॉक्टर अपनी पत्नी और दीदी के साथ अपना पुराना घर देखने को ाते हैं। उस घर का मालिक ो एक मध्यवर्गीय व्यक्ति है, उन लोगों का स्वागत करता है। वे लोग अपने मास्टर व्यास साहब के ब ो- ानकर अपनत्व की भावना से पूरे परिवार को अतिथियों का परि ाय कराता है। उनके इ छानुसार पूरा घर दिखाकर आदर के साथ उनकी विदाई करता है। लेकिन वह डॉक्टर ो एक उ ावर्ग के हैं, उनके घर आये हुए म ादूर ब ों को वहाँ से दफा करता है। इस प्रकार 'पुराना घर' कहानी मध्यवर्गीय लोगों के संस्कार का एक नमूना है।

मध्यवर्गीय लोगों को ीवन में अनेक संघर्ष करने पड़ते हैं। यह संघर्ष बड़ों तक सीमित न रहकर ब ों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। 'भूत' एक मध्यवर्गीय बालक के संघर्ष की कहानी है। इस कहानी में समीर को पड़ोसी ब ा गप्पु नी ा दिखाते हुए इस प्रकार कहता है-"काँ ा की गोलियों से छोटे लोग खेलते हैं और उनकी हवेली में तो संगमरमर की गोलियों से बक्से भरे पड़े हैं। अब की बार गाँव से लौटकर दिखा देगा।"[10] समीर अपनी विवशता के कारण रोने लगता है। ब ों के इस वर्ग भेद के मूल में बड़ों का वर्ग भेद भी शामिल है क्योंकि एक समान बनाए हुए क्वाटर्स में उ ा वर्ग के लोग अपनी विशिष्टता दिखाने के लिए कई परिवर्तन करते हैं। ैसे मेहंदी की बाड़ लगाना, ारदीवारी खीं ाकर छोटा-मोटा फाटक लगा लेना, दरवा ों के ऊपर या सामने वाली खिड़की की आड़ी सलाखों के ऊपर अपनी नाम पट्टी लगाना आदि। निम्नवर्ग के लोग अपने अस्तित्व की रक्षा में प्रतिस्पर्धा को हास्यास्पद बना देते हैं। कॉलोनी के इस वर्ग संघर्ष के मूल में प्रद्युम्नसिंह का ' ायभवन' है। उस को देखकर मध्यवर्ग के लोग अपनी विशिष्टता दिखाना ाहते हैं। समीर पर भी इसका प्रभाव है। इसीलिए ाब वह गाँव ाता है तो हवेली से संगमरमर की गोलियाँ लाना ाहता है। इस प्रकार कहानी में समीर पात्र के द्वारा वर्ग-संघर्ष देख सकते हैं।

मध्यवर्गीय परिवारों में पारिवारिक विघटन का एक कारण अर्थाभाव भी है। इसके कारण वह अपने ब ों को विरासत के रूप में केवल शिक्षा ही दे पाते हैं। वे अपने ब ों से ये आशा रखते हैं कि-वे अ छी नौकरी पाकर आर्थिक रूप से उनकी सहायता करें। यही आशा 'कविप्रिया' कहानी में पंडित ी अपने बेटे गिरीश से करता है। लेकिन गिरीश सिफारिशों के बल पर मिली

[10] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.92

हुई नौकरी का तिरस्कार करता है ि ससे क्रोधित होकर पंडित ी उसे घर से बाहर निकालता इस प्रकार अर्थाभाव के कारण गिरीश के परिवार में दरार आ गया है। नौकरी का अभाव और अर्थाभाव को दूर करने के लिए गिरीश कविवृत्ति स्वीकारता है। यह विषय पंडित ी गिरीश के दोस्त के द्वारा सुनकर उसकी सामा ाक स्थिति द र्ा करते हुए गाली देता है। इस प्रकार यह एक मध्यवर्गीय व्यक्ति के दर्द और संघर्ष की कहानी है।

2.1.2 पहाड़ ीवन पर केंद्रित कहानियाँ

हिंदी कहीन में अब तक कई कहानीकारों ने पहाड़ केंद्रित कहानियाँ लिखी हैं। ाब भी पहाड़ की ा ार्ा होती है तब अनायास ही मनोहरश्याम ोशी, रमेश ंद्र, शैलेश मटियानी, शिवानी, बटरोही, पंक ा बिष्ट, शेखर ोशी ैसे कहानीकारों के नाम याद आ ाते हैं। मगर आश ार्य की बात यह है कि सभी पहाड़ केंद्रित कहानियाँ लिखते हैं लेकिन उनकी कहानियों में पहाड़ की अलग-अलग छवियाँ प्रस्तुत करते हैं। किसी ने पहाड़ियों के ान ीवन में हुए और होनेवाले परिवर्तन को अपनी कहानियों में ि त्रित किया है तो किसी ने पहाड़ के सौंदर्य को केंद्र में रखकर एक रोमानी दुनिया की कल्पना की है। इसलिए हमारे दिमाग में यह प्रश्न उठता है कि इन र ानाकारों ने पहाड़ के ि स संसार को हमारे सामने प्रस्तुत किया है, वह किस हद तक सही है तथा वह समग्रता में पहाड़ के ान ीवन, वहाँ की संस्कृति, सामा ाक परिवेश, पर्यावरण आदि को सही ंग से रेखांकित कर पाया है या नहीं? लेकिन शेखर ोशी की पहाड़ी ीवन पर आधारित कहानियाँ किसी एक छवि को प्रस्तुत नहीं करती बल्कि समग्र पहाड़ी ीवन को उनके आ ार-व्यवहार, रीति-रिवा ा धार्मिक, आर्थिक और सामा ाक परिस्थितियों को प्रकट करती हैं। दूसरे शब्दों में शेखर ोशी की कहानियाँ हमें संपूर्ण पहाड़ी ीवन को दर्शाती हैं। उनकी कुछ कहानियाँ सीधे

‘शहर’ से ालकर ‘पहाड़’ से ुड़ती हैं तो कुछ पहाड़ से निकलकर शहर की भीड़ में सम्मिलित होती हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में पहाड़ी ीवन से संबंधित अलग-अलग विषयों को कथ्य या विषय-वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया है।

पहाड़ पर केंद्रित कहानियाँ ाब भी लिखी ाती हैं उसमें अक्सर शोषण और उनके बाह्य परिवेश से कटाव की ा ार्ा होती रही है। शेखर ोशी भी इसी विषय को अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। हर एक को अपने परिवेश के प्रति लगाव रहता है। नौकरी या ीवनोपा न के लिए ाब वह अपने परिवेश से दूर हो ाता है या कट ाता है तब उस में अपने परिवेश से कट ाने का दुःख अवश्य रहता है। इसी विषय को शेखर ोशी ने ‘टूटन’ कहानी में प्रस्तुत किया है। इस कहानी में नौकरी की व ाह से शहर में रहनेवाला त्रिलो ान अपने माता-पिता के देहांत के बाद उनकी ामीन- ायदाद बे ाकर शहर में घर बनाने की यो ाना से गाँव लौटता है। ये यो ाना स्वयं त्रिलो ान की इ छा के विरुद्ध है। लेकिन वह अपनी पत्नी और ब ों की इ छा से सम ौता कर लेता है। गाँव ाने के बाद उसे अपना ब ापन और माता-पिता का प्यार याद आ ाता है। वह अपनी ामीन- ायदाद बे ाने के सिलसिले में लीलाधर ी की राय लेने ाता है तो उनकी बातों में इस का विरोध स्पष्ट होता है-"आदमी परदेस में कितना ही बड़ा बन ाय, कितनी भी संपत्ति ोड़ ले, रहेगा परदेसी ही। परदेस तो विमाता की गोद है। कितना भरे करे विमाता-विमाता ही रहेगी। अपना घर अपनी भूमि की बात ही और है। यही असली माँ है। स ा कहना, इतने साल तुम परदेस में रहे हो लेकिन ो शांति तुम्हें यहाँ मिलती है वह क्या कभी क्षण-भर के लिए भी वहाँ मिली?" [11] लीलाधर ी के इन बातों से वह

[11] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.

असंतुष्ट होकर सुबेदार दानसिंह को अपनी ामीन- ायदाद बे ा देता है। ाते समय अपने गाँव को देखकर उसे अपने ब ापन की यादें याद आती हैं और साथ में अपने परिवेश से कट ाने के दुःख के कारण वह घुटनों में सिर देकर रोने लगे। अंत में अपनी गलती का अहसास होने के कारण वह इस प्रकार कहने लगता है-"ठाकुर, बुरा मत मानना। मु ासे गलती हो गयी। मैं यह सौदा नहीं करूँगा। तुम अपने रुपये वापस ले लो। कोर्ट-क ाहरी का दुहरा ख र्ा मैं भर दूँगा।"[12] उनकी इन बातों से अपने परिवेश से कट ाने का दुख और अपने गाँव के प्रति लगाव स्पष्ट हो ाता है।

यही विषय हमें 'व्यतीत' कहानी में भी मिलता है। इस कहानी में बाबू हर साल गर्मियों में अपने गाँव ाने की कल्पना करता है। लेकिन रमेश की छुट्टियों का अभाव और उनकी व्यस्तता के कारण वे लोग ा नहीं पा रहे हैं। अपने इस गाँव ाने की इ छा को वह तीन साल उम्र की आशा को पहाड़ की फल, पत्ते, फूल, पानी के बारे में बताते हुए प्रकट करता है। इससे पहले रमेश अपने पिता, बाबू से कुछ समय के लिए दफ्तर की, पड़ोसियों की या रिश्तेदारों की बातें करते हैं। लकिन अपनी व्यस्तता के कारण और कहीं बाबू उन्हें गाँव ले ाने की बातें पूछेंगे। इस डर के कारण वह अब कटा-कटा-सा रहने लगा है। इसी कारण से बाबू हमेशा अपने काल्पनिक ागत में डूबते रहते हैं। अ ानक एक दिन उनको पता ालता है कि निगम साहब पहाड़ ानेवाले हैं, तो वह अपना उत्साह रोक नहीं पाता इसीलिए वह वहाँ ाने की तैयारियों के बारे में, देखने योग्य मंदिरों के बारे में, पहाड़- ा.ते समय लेनेवाले सु ावों के बारे में सू ाना देता है और अंत में वह खुद न ाने के दुख के कारण खड़े-खड़े टूरिस्ट विभाग के उस पुराने कैलेंडर के ित्र को देखते रह ाते हैं। इस कहानी में न केवल बाबू का अपने परिवेश से कट ाने का दुख प्रकट हो रहा

[12] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.

है। बल्कि युवकों का बु ुर्गों के प्रति उपेक्षित भाव और बु ुर्गों का समर्पित भाव प्रस्तुत हो रहा है।

केवल नौकरी की व ाह से शहर में बस ाने से अपने गाँव से कट नहीं ाते बल्कि संपूर्ण रूप से तब कट ाते हैं ाब हमारे परिवार का अंत गाँव में होता है। यही बात हमें 'विस ार्न' कहानी में मिलता है। 'विस ार्न' कहानी में नौकरी के कारण दोनों भाई तारी और गिरीश शहर में बस ाते हैं तो गाँव में केवल भाभी ाो बाल विधवा है वह रह ाती हैं। दोनों भाई अपने साथ ालने का आग्रह करने पर भी भाभी अपनी आखिरी साँस पुरखों की देहरी पर ही छोड़ने की दुहाई देती है। दोनों भाई अपनी ामीन- ायदाद शेरसिंह को इस सम ौते पर बे ाते हैं कि " ाब तक भाभी ीवित हैं, वह उस मकान में रहेंगी और न रहने पर ही शेरसिंह उस हिस्से को भी अपने अधिकार में ले लेगा।"[13] विधवा भाभी के देहांत के बाद वह गाँव लौटता है तो सभी अपनी-अपनी तरफ से भाभी के प्रति उनकी सहानुभूति दिखाते हैं तो कुछ लोग भाभी को तारी और गिरीश के प्रति प्रेम का उल्लेख करते हैं। तारी को अपने ब ापन की कुछ यादें याद आती हैं। वह बारह दिन भाभी को नदी में पिण्डदान करता है। पिण्डदान के अंतिम दिन में ाब तारी पिण्डदान के बाद "तिलां ालि दी तो उसे अपने अंदर एक भयंकर शून्य का अनुभव होने लगा। उस सर्पिल रंगती नदी के किनारे शिलाखंड पर बैठे-बैठे उसे लगा, ैसे अं ाली में तिल-कुश लेकर उसने भाभी को हनीं बल्कि गाँव के तारी को विसर्ि ात कर दिया है ाो आ ा से सबके लिए अ ानबी हो ाएगा।"[14] इस प्रकार तारी का अपने गाँव से कट ाने का दुख प्रस्तुत होता है। "और गाँव के लिए यह सबसे बड़ी त्रासदी है, एक प्रकार से गाँव ि ास अनमोल हीरे को शहर इसलिए भे ाता है, कि वह अपनी (गाँव)

[13] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.149
[14] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.153

स्थिति में कुछ बदलाव ला सकेगा लेकिन शहर की लंबी गुफा उसे निगल ाती है।"[15]

गाँव से शहर में बस ाने से संयुक्त परिवार टूट ाता है। इस टूटते परिवार का बुरा असर बु ुर्गों और असहाय विधाओं पर पड़ता है। उनकी दयनीय और विवश स्थिति को शेखर ोशी ने 'परिक्रमा' नामक कहानी में प्रस्तुत किया है। इस कहानी में हरिदत्त ी के ार लड़कों में से दो लड़कों की मृत्यु के कारण से घर में दो अभाग्य विधवाओं पर दोनों सुहागिनों का अधिकार लता रहता है। दोनों सुहागिनों को अपने कमाऊ पतियों के कारण अपने-आप पर समान गर्व है। घर में व्याप्त कलह को दूर करने के लिए रामदत्त बँटवारे के बारे में ाब बात करता है तो हरिदत्त इसका विरोध करते हुए कहता है। "रामी! िस दिन मैं मर ाऊँगा, उस दिन तुम पहले बँटवारा करना फिर मेरी अर्थी उठाना। पर ाब तक मैं िंदा हूँ। कभी ऐसी बात इस घर में नहीं उठेगी।"[16] हरिदत्त की इन बातों से परिवार टूटने का दुख बु ुर्गों को होता है यह विषय स्पष्ट हो रहा है। अ ानक हरिदत्त की मृत्यु से दोनों भाई शहरों में बस ाने से गाँव में केवल अभाग्य विधवाएँ रह ाती हैं। एक दिन ोठी बहु का बेटा भुवन के पत्र से उसे अ छा पद मिलने की सू ाना मिलती है तो दोनों सुहागिनें ोठी बहु पर अपार प्रेम दिखाती हैं और अपने साथ रहने के लिए आग्रह करती हैं। लेकिन अ ानक भुवन पत्र के द्वारा अपनी कार एक्सीडेंट की खबर सुनाता है तो दोनों सुगागिनें ोठी बहु को गाँव ाने से नहीं रोकते। दोनों विधवाएँ एक दूसरे का सहारा बनकर वापस गाँव लौट ाती हैं। इस कहानी से यह बात स्पष्ट हो ाती है कि आर्थिक परिस्थिति किस प्रकार टूटते परिवार को प्रभावित करती है।

---

[15] हंस, सं.रा ेंद्र यादव, अप्रैल-1990

[16] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.143

पहाड़ी ीवन में सबसे यादा दिखनेवाली और एक समस्या है शोषण। यह शोषण मध्यनिम्नवर्गीय और निम्नवर्गीय लोगों के साथ होता है ो केवल पेट की समस्या से ू ा रहे हैं। 'बो ा' कहानी एक निम्नवर्गीय कुली का उ ा वर्ग के लोग किस प्रकार शोषण करते हैं इस स्थिति को प्रस्तुत करती है। इस कहानी में एक युवा कुली की आर्थिक विसंगतियों की ओर संकेत करते हुए, विषम परिस्थितियों में भी उसके सामा िक और नौतिक बोध को कहानीकार ने प्रस्तुत किया है। यह वहाँ के युवा की सबसे बड़ी त्रासदी है कि-"होश संभालने के बाद से ही उसे कभी प्रधान की ोर-बकरियों को ाराने की ि म्मेदारी सौंप दी ाती तो कभी खेतों में हाथ बटाने के लिए बुला लिया ाता।"[17] सही-गलत मार्ग अख्तियार कर उन्हें काम पर बनाये रखा ाता। "ले यार, एक बीड़ी दम लगा ले, फिर से दस-बारह पौधे रह गये हैं, इन्हें भी निबटा देना इसी हाथ।"[18] पर ऐसा नहीं है कि पहाड़ के तरुण कुली इस बात को सम ाते नहीं हैं, बल्कि सब कुछ ानते और सम ाते हुए भी वे सहने के लिए विवश हैं। इस प्रकार निम्न मध्यवर्गीय म ादूरों का उ ावर्गीय लोगों के द्वारा शोषण किया ाता है।

'हलवाहा' कहानी में यही शोषण दूसरे तरीके से हमारे सामने आता है। इस कहानी में उ ा वर्ग के बद्री प्रधान निम्न वर्ग के ीवानंद के खेत को अपने खेतों में मिला लेना ाहता है। इसके लिए वह उनकी संवेदनाओं को भी उभारने से बा ा नहीं आता-" ाब से तुम्हारे पिता गु ारे हैं, अब गाँव में किसी से बोलने-बतियाने को मन नहीं करता। देह में ताकत होती और तुम्हारी तरह ार अ छर प .ा होता तो इस खेती-बाड़ी की माया छोड़कर परदेश में कहीं

[17] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.116
[18] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.116

कोई रो ागार खो ा लेता।"[19] ीवानंद को खेत बे ाने के लिए म ाबूर करते हुए बद्री प्रधान ीवानंद के हलवाहे को टकनपुर की नयी सड़क निर्माण के काम में लगा लेता है और ीवानंद को भी उस काम में रखने के लिए तैयारियाँ करता है। लेकिन अंत में ीवानंद इस शोषण का विरोध करते हुए स्वयं अपने खेत में हल ाला लेता है ो उनकी ाति के विरुद्ध है। इस प्रकार इस कहानी में गाँव का सामंत वर्ग किस प्रकार गाँव की भोली-भाली ानता से ब ी हुई ामीन हड़पने का षडयंत्र करता है उसे प्रस्तुत किया गया है।

पहाड़ की प्रमुख विशेषता उसका सौंदर्य और वातावरण है। इसका ित्रण 'मेरा पहाड़' संग्रह की सभी कहानियों में है। 'सिनारियो' कहानी में प्रकृति ित्रण के साथ-साथ उनकी आर्थिक परिस्थितियों का उल्लेख भी किया गया है। रवि अपनी वृत्तित्र की शूटिंग के लिए अपने मित्र के पहाड़ी गाँव आ पहुँ ाता है। वहाँ के सौंदर्य को देखकर वह इस प्रकार उस का वर्णन करने लगता है-"आसमान साफ था। अस्त होते हुए सूर्य का आलोक किन्हीं अदृश्य दिशाओं से आकर उस संपूर्ण हिम-विस्तार को सिंदूरी आभा से भर गया था। धीरे-धीरे वह सिंदूरी आभा बैंगनी रंग में परिवर्तित होने लगी और पर्वत श्रृंखला की सलवटें गहरी श्यामल रेखाओं में अपनी पह ान बनाने लगी थी।"[20] रवि अपेन मित्र महेश के घर में रहता है ाहाँ महेश की माँ आँमा और बेटी सरुली रहते हैं। रात में ाब वह सो रहा था तब आँम माित्र के लिए रवि का कपड़ा टटोलती है और अपनी ला ारी प्रकट करते हुए कहती है कि-"अब बाँ ा की लड़कियाँ नहीं मिल पाती और ीड़ के कोयलों की दबी आग सुबह तक ूल्हे में नहीं रहती। स्पष्ट था कि माित्र का ख र्ा का भार उनके लिए

[19] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.24
[20] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.129

महँगा पड़ता था।"[21] आँमा की इन बातों से उनकी आर्थिक स्थिति स्पष्ट हो रही है। सरुली द्वारा बहुत दूर से बड़े मकान से माँगकर लाये हुए अंगारे तुषार बी ा में धरती पर बिखर ाते हैं और ब ो हुए निःशेष अंगारों से दोनों बू ियाँ और ब ी बहुत प्रयत्न के बाद ूल्हे को ालाती हैं।

धार्मिक परिस्थितियाँ

पहाड़ियों में भगवान के प्रति विश्वास यादा होता है। वे लोग उनके सुख-दुखों का संबंध भगवान से ोड़ते हैं। 'कथा-व्यथा' कहानी में यही बात स्पष्ट होती है। यह कहानी एक महिला ीवंती पर केंद्रित है, ो अपने अकेलेपन की व्यथा को समा ा और भगवान के साथ बांटकर दूर करना ाहती है। इस कहानी में दो कथाएँ साथ-साथ ालती है। एक सत्यनारायण भगवान की और दूसरी ीवंती की। अगर सत्यनारायण कथा आदर्शवाद को प्रस्तुत करती हैं तो ीवंती की कथा ीवन के यथार्थवाद को प्रकट करती हैं-"इतिश्री स्कंधपुराणे रेवा खंड सत्यनारायण कथाया... प्रथम, द्वितीय, तृतीय, ातुर्थ... एक के एक अध्याय समाप्त होते ा रहे हैं। ीवंती का मन कथा के बाहर भटक रहा है.. भगवान ने एक लड़की दी थी, उसे ही वह सुखी देख पाती।"[22] ीवंती भी अपने ओर बेटी के सुखी ीवन के लिए सत्यनारायण कथा कराना ाहती है, लेकिन अर्थाभाव के कारण से नहीं करा पाती है। वह अपनी ामा-पूँ ी दान कर देती है और भगवान पर विश्वास रखते हुए कथा सुनते-सुनते वह सो ाने लगती है-"भगवान उसे भी स्वप्न में दर्शन देकर कहेंगे- ीवंती! अब तेरे ीवन में रोग, शोक, दुख, दारिद्रय मिट गये हैं। तेरी भगवती को मैं पुत्ररत्न दूँगा, तेरे ामाई को देश में रो ागार मिल गया है। दो ी के पास

---

[21] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.132
[22] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.108

गिरवी पड़े अपने खेत तू इस वर्ष छुड़ा लेगी। तेरे गोठ में दो बैल बंध ाायेंगे।"[23] स्पष्टतः यह कहानी एक साधारण भारतीय महिला के सपनों को और उसकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा को प्रस्तुत करती है। ाीवंती कथा न कर पाने की स्थिति में उसने ाो पैसा कथा में दान दिया था, वह सिक्का खोटा निकल ाता है, ऐसा वह स्वप्न देखती है और उसका मन दुःखी हो उठता है-" ाीवंती घुटनों में सिर डाले सो ाती रही कि सुबह के सपने स ा होते हैं।"[24]

इस कहीन से पहाड़ी एवं भारतीय महिलाओं की धार्मिक परिस्थिति स्पष्ट हो रही है। सो ाने वाली बात यह है कि आखिर वे कौन-सी स्थितियाँ हैं, ि ासके कारण आम भारतीय महिलाएँ अंधविश्वास और रू ि वाद का शिकार होती है।

'छोटे शहर के बड़े लोग' नामक कहानी से शेखर ाोशी पहाड़ की सामा ाक स्थिति को प्रस्तुत करते हैं। इस कहानी में मछलीवाला और मूँगफलीवाला दोनों पहाड़ी इलाके से ही शहर आकर अपना-अपना व्यापार करते हैं। मछलीवाले की ब ती हुई बिक्री ने मूँगफलीवाले को ईर्ष्यालु बना देती है। अपने इस ईर्ष्या के कारण वह मूँगफलीवाले की गैरहा ारी में उसका मे ा तोड़ता है। इस घटना से उस प्रांत में हल ाल म ाती है। वहाँ के कुछ लोग मछलीवाले का पक्ष लेते हैं तो कुछ मूँगफलीवाले का। वे लोग इस मामले को यूँ ही शांत नहीं करना ाहते हैं। ाब मछलीवाला वापस आकर इस स्थिति तो देखता है तो वहाँ के कुछ बु ुर्ग आपसी समन्वय के कारण सारा दोश ट्रक पर लगाकर मामले को शांत करते हैं। इस प्रकार उस शहर में कुछ बु ुर्ग लोग हैं तो कुछ ईर्ष्या और तमाशा देखनेवाले लोग भी हैं ि ान से वहाँ की सामा ाक स्थिति का ि ात्रण स्पष्ट होता है।

---

[23] मेरा पहाड़, शेखर ाोशी-पृ.111
[24] मेरा पहाड़, शेखर ाोशी-पृ.111

पहाड़ी इलाके के यादातर लोग खेती-बाड़ी पर निर्भर होते हैं। उनके तन मन खेतों पर ही रखते हैं। 'रास्ते' कहानी में हम इसी प्रकार के किसान को देख सकते हैं। इस कहानी में 'मैं' और 'दादा' नामक पात्र शादी के लिए दूसरे गाँव ाते हैं। मगर दादा का सारा मन गाँव के खेतों पर ही है। वह शादी में रहकर भी खेतों के बारे में इस प्रकार सो ाने लगता है-"इस साल सब खेती ौपट होकर रहेगी। अकेले किशन के बस का नहीं है यह सब। थोकदार लोग रात में ारूर पानी तोड़ देंगे-बेईमान हैं ससुरे सब।"[25] लौटते समय ाल्दी घर पहुँ ाने के लिए बटिया रास्ते को ुन लेते हैं। गाँव की सीमांत से ही दादा खेतों में काम करनेवाले म ादूरों को ाते हुए देखकर ऊँ ो स्वर में हाँकते हुए कहता है-"अरे पिरमुवाँ, ब ुली! अभी ार हाथ दिन शेष हैं, तुम लोग कहाँ भागे ा रहे हो रे!"[26] दादा को तब तक शांति नहीं मिलती ाब तक वह इस हफ्ते में हुए काम को न देख लेता।

इस प्रकार शेखर ोशी पहाड़ियों के खेतों के प्रति लगाव और किसान ीवन को 'रास्ते' कहानी के द्वारा पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

पहाड़ी लोग यादातर अंधविश्वाासी होते हैं। वे लोग हुणियाँ और बाबाओं पर विश्वास रखते हैं। 'आदमी का डर' और 'रंगरुट' इन्हीं अंधविश्वासों पर आधारित कहानियाँ हैं। पहाड़ी और ग्रामीण प्रांतों में सर्दियों में एक वि ित्र प्रकार के लोग घूमते हैं ि न्हें 'हुणियाँ' कहते हैं। ब ों को मनाने के लिए अगर माँ 'हुणियों' का नाम लेती हैं तो ब ा सहमकर ुप हो ाता है। 'आदमी का डर' इन्हीं हुणियों के प्रति और उनके वेश-भूषा के प्रति ब ों के डर को प्रस्तुत करनेवाली कहानी है। नि नि वन में एक ब ो का

[25] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.
[26] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.

मुठभेड 'हुणिया' से होने से उस पर क्या बीतता है, उसको इस कहानी में प्रस्तुत किया गया है।

इसी प्रकार 'रंगरूट' कहानी में ' ाऊ बाबा' के प्रति उस गाँववालों के अंधविश्वास को प्रकट किया गया है। पहाड़ी गाँवों में उ ा शिक्षा न होने के कारण शहरों में प. कर गर्मियों की छुट्टियों में गाँव वापस आनेवाले ब ों के व्यवहारों में कई परिवर्तन आते हैं। ैसे कोई अपनी वेश-भूषा में परिवर्तन दिखाता है तो कोई फोटो कैमरा से गाँववालों को आकर्षित करना ाहता है। बड़े घर का ानुवाँ मौ ा लेने के लिए हल ालाता है तो नब्बू को बाँसुरी से प्रेम हो ाता है। कुछ लड़के लोकगीतों से संगीत साधना की दीक्षा लेने की यो ानाएँ भी बनाने लगे थे। उसी समय कहानी में 'मैं' नामक पात्र को उस गाँव के ' ाऊ बाबा' के अस्तित्व को लेकर िंता होती है। उस गाँव में ' ाऊ बाबा' का बड़ा महत्व है। बाबा को लोग भगवान ैसे मानते हैं। उनके महिमाओं के बारे में कई कथाएँ भी हैं। लेकिन कहानी के अंत में शिक्षित 'मैं' नामक पात्र के द्वारा इस अंधविश्वास का विरोध देख सकते हैं।

'स्वप्न देश की एक उदास शाम' शीर्षक कहानी बिछड़े हुए पहाड़ी दोस्तों के दर्द की कहानी है। इस कहानी में देबिया और मोहन दोनों पहाड़ी गाँव में अप्पर प्राइमरी तक साथ प.ते हैं। गाँव में उ ा शिक्षा न होने के कारण मोहन प.ने के लिए शहर ाला ाता है तो देबिया गाय-बैलों को ाराते हुए गाँव में रह ाता है। देबिया पहाड़ की ा.ाई पर ाय की दुकान ालाते हुए ीवन-यापन करता है। अ ानक एक दिन उसकी मुलाकात अपने पहाड़ी मित्र मोहन से हो ाती है तो दोनों मित्र बड़ी देर तक अपनी विगत शैशव की, गाँव-पड़ोस की, दैनिक ीवन-संघर्ष की बातें करने लगते हैं। ाब मोहन अपने साथ के लड़कों के बारे में पूछता है तो देबिया इस प्रकार ावाब देता है-

"मोहन बाबू, सब ाले गये। कोई कहीं, कोई कहीं ाहाँ ि सके सींग समाये।"[27] देबिया की इन बातों से अपने मित्रों से बिछड़ने का दुःख और दर्द पता ालता है। देबिया अपने पहाड़ी मित्रों को वापस पहाड़ में देखना ाहता है। इसीलिए वह मोहन से विनती करते हुए कहता है-"शाम को इधर आ ाया कीि ए, भला लगता है, दो घड़ी बातों में ही कट ाती है। आप ैसे लोगों के दर्शन हो गये बड़ा सौभाग्य।"[28] अंत में दोनों मित्र विदाई लेते हुए एक-दूसरे की आँखों में किसी स्वप्न को खो ाने लगते हैं।

इस प्रकार शेखर ोशी ने 'मेरा पहाड़' कहानी संग्रह के द्वारा पूरे पहाड़ी और ग्रामीण ीवन की विवशता, दर्द और संघर्ष को सहानुभूति के साथ सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है।

2.1.3 औद्योगिक परिवेश की कहानियाँ

शेखर ोशी के ीवन का एक महत्वपूर्ण भाग कारखानों में बीता है। उन्होंने अपनी अनुभूतियों को यथार्थ के आधार पर कथा-वस्तु के रूप में अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। ि ससे कहानियों में एक प्रकार की सह ाता और सरलता आ गई। उन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा कारखाना म ादूरों के ीवन संघर्ष, दर्द और मर्म को खोलकर सामने रख दिया है। उनकी इस कहानी-कला का विकसित रूप उनकी कहानियों में दिखाई देता है। 'बदबू' ने नई-कहानी के दौर को ाक ोरा तो 'सीि याँ' और 'मेंटल' ैसी कहानियों ने सत्तर के दशक की प्रतिबद्ध कहानियों की तरह व्यवस्था और श्रमिकों के सामूहिक टकराव को प्रस्तुत किया है। 'नौरंगी बीमार है' कहानी के द्वारा म ादूर के ईमानदारी से बेईमानी तक की यात्रा को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया

[27] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.160
[28] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.160

है। इस प्रकार हम देखते हैं कि शेखर ोशी म ादूर और उनके संघर्ष को अपनी कहानियों में महत्वपूर्ण स्थान देते हैं।

म ादूरों का संघर्ष उनके म ादूर बनने के साथ ही आंरभ होता है। ाब वह काम सीखने के लिए उस्ताद के पास ाता है तभी से वह म ादूर बन ाता है। उसी सीखने की प्रक्रिया में ही उसे उस्ताद से संघर्ष करना पड़ता है। म ादूर का प्रारंभिक संघर्ष हमें 'उस्ताद' शीर्षक कहानी में दिखाई देता है। यह मिस्त्री से उस्ताद तक ब ने एक तकनीशियन और उससे ुड़े प े-लिखे अपरेंटिस के संघर्ष की कहानी है। इस कहानी में एक शिष्य मोटर इं ान का काम सीखने के लिए उस्ताद के पास ाता है। उस्ताद अपनी पूरी विद्या शिष्य को नहीं बताना ाहते। इसीलिए उन्होंने 'वाल्व टाइमिंग' को नियंत्रित करने का बारीक हुनर शिष्य को नहीं बताया। अब तक किसी शिष्य को नहीं बताया। इस विषय को ाानने के लिए शिष्य को उस्ताद के साथ संघर्ष करना पड़ा। म ादूर का यह संघर्ष अंत तक ालता रहा। लेकिन ाब वह शहर छोड़कर कहीं और नौकरी करने ा रहा है तो तब उस्ताद को फिक्र होती है कि अगर मेरा शिष्य 'वाल्व टाइमिंग' का काम नहीं कर पाया तो उस्ताद की ही बदनामी होगी। शिष्य बाहर ा रहा है और उससे कारखाने में उस्ताद के महत्व के घटने का खतरा नहीं है। इसलिए वह स्टेशन ाकर शिष्य को वह ज्ञान दे आते हैं।

म ादूर का यह आरंभिक संघर्ष हमें 'बदबू' कहानी में भी मिलता है। कहानी में 'वह' नामक पात्र को कारखाने में पहले दिन साबुन लगाने पर भी अपने हाथों से बदबू आती है। अन्य किसी म ादूर को ऐसा नहीं लगता। यानी वही अकेला ऐसा है, ो लगातार बदबू महसूस करता है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह कारखाने के म ादूरों से भिन्न है। मेने ामेंट या कारखाने के मालिक के खिलाफ लड़ना ाहता है। इसीलिए वह म ादूरों को एकत्रित करने का प्रयत्न

करता है। इस प्रयत्न में उसे पग-पग पर आंतरिक और बाह्य संघर्ष का अनुभव करना पड़ता है। क्योंकि म ादूर अपने स्वार्थ के लिए अपने साथी का भी नुकसान कर बैठते हैं। इतना ही नहीं, वे मालिकों, साहबों के दलाल भी बनते हैं और अपने लिए अपमान ानक स्थितियों का स्वयं निर्माण भी करते हैं। इसीलिए अंत में वह इस संघर्ष में हार ाता है। अब उसे अपने हाथों में साबुन लगाए बिना भी 'बदबू' नहीं आती क्योंकि अब वह भी सैकड़ों की तरह है, उनके इस संघर्ष की हार स ाइयों के आगे ला ार होने के कारण हुई है। वास्तव में 'बदबू' सर्वहारा की अभिशप्त एकता की कहानी है।

शेखर ोशी अपनी 'सीि ियाँ' और 'मेंटल' कहानियों के द्वारा व्यवस्था और श्रमिकों के सामूहिक टकराव को प्रस्तुत करते हैं। 'सीि ियाँ' कहानी में मालिक म ादूरों को टी-ब्रेक के लिए पंद्रह-बीस मिनट वक्त भी नहीं देना ाहते हैं क्योंकि उन्हें इस बात का डर है कि इस बीस मिनट में सारे म ादूर मिलकर कोई नई समस्या उनके सामने लाकर रख देते हैं। इस स्थिति का निवारण करने के लिए मैने ामेंट ने ट्रालियों के द्वारा ाय अलग-अलग शाप में भे ाने की यो ाना बनाई है। इसी विषय को लेकर म ादूर और व्यवस्था के बी ा संघर्ष होता है। संघर्ष की इस प्रक्रिया में व्यवस्था के खिलाफ म ादूर अपना-अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं कि-"बहुत हरामी है भैय्या, अपना काम निकालना हो तो बेटा-बेटा, भैय्या-भैय्या कहेगा और काम निकल गया तो बस-फिरी। कोई ाह्म पह ानै न रखेगा।"

"कारीगरी की कोई इ ात नहीं इसके लिए, उल्टा-सीधा कैसा ही होय बस काम ालाऊ हो ाना ाहिए। दिन-भर बस हाब! हाब! प्रोडक्सन ब ाओ। प्रोडक्सन ब ाओ।"[29] व्यवस्था की तरफ से मैने ार इन सारी बातों का ावाब

[29] डाँगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.41

देना ाहता है लेकिन उनके अहं या पद के कारण म ादूरों के पास नहीं ा पाता। इस प्रकार व्यवस्था और श्रमिकों के बी ा का संघर्ष ालता रहा। इसी प्रकार का संघर्ष या टकराव हमें 'मेंटल' कहानी में भी मिलता है। इस कहीन में 'वह' नामक पात्र एक सत्यवादी, ईमानदार, स्वाभिमान म ादूर है। ि सके कारण उसकी सर्विस बुक में कहीं कोई लाल निशान नहीं है। अपनी कारीगरी के लिए कई बार उन्होंने बड़े अफसरों से भी शाबाशी पाई। लेकिन इतनी मेहनती म ादूर पर एक दिन भी वह साहब के हाथ में फाँस ुभाने का इल ाम मिस्त्री उस पर लगाता है। इस के बाद कई बार वह साहब खुशमि ा ा से इसी विषय पर म ाक करने लगते हैं, तो साथी उसका साथ देते हैं। अंत में उस पर टूलकिट से औ ार ुराने का आरोप लगाते हैं। वह स्वाभिमान म ादूर होने के कारण उससे ये सब सुना नहीं ाता। वह व्यवस्था से संघर्ष करने लगता है। संघर्ष की इस प्रक्रिया में उसका अंतः संघर्ष विस्फोटित होकर वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठत है और पागल यानी मेंटल बन ाता है। इस प्रकार शेखर ोशी व्यवस्था और श्रमिकों के बी ा के संघर्ष को विस्तारपूर्वक हमारे सामने रख देते हैं।

औद्योगीकरण से कई लोग किसान से म ादूर बन गये। लेकिन ामीन के प्रति उनके लागव के कारण अपनी ामीन को ब ाये रखना ाहते हैं। इस ामीन ब ाने की प्रक्रिया में उन्हें कई संघर्ष करने पड़ते हैं। 'आखरी टुकड़ा' इसी ामीन संघर्ष की कहानी है। इस कहानी में 'मँगरू' एक किसान था। लेकिन सरकारी लोगों की ामीन आक्रमणों की व ाह से वह किसान से म ादूर बन ाता है। वह अपनी ामीन पर बने कारखाने में म ादूरी करते हुए ब ी हुई उस ामीन के टुकड़े को देखकर संतुष्ट है। क्योंकि उस ामीन पर मंगुरू का पिता ान लगाते थे। मरते समय भी वह कराहते हुए कहा था-"पुरखों की

थाली हैं, मालिक! इसका सौदा मत करो।"[30] लेकिन अंत में स्वयं मँगरे का बेटा सूर ा उस ामीन को कारखाने में बदल देता है। इस प्रकार यह दो पीि यों के वि ाार एवं कार्यशैली के शाश्वत द्वंद्व की कहानी है। इस कहानी में शेखर ोशी ने किसान से म ादूर बने एक म ादूर के अंतः और बाह्य संघर्ष को प्रस्तुत किया है।

म ादूर ीवन में रिटायरमेंट दिन का बड़ा महत्व रहता है। उस दिन एक म ादूर किस प्रकार वि ाार करता है वह अपने अनुभवों को किस प्रकार बाँटना ाहता है इन सारी बातों को 'आशीर्व ान' शीर्षक कहानी में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार यह एक स्मरणीय कहानी भी है। इस कहानी में श्यामलाल अपने म ादूरी ीवन का अंतिम दिन पूरा कारखाना घूमते हुए अपने अनुभवों को याद करता है। वह अपने कारखाने के सभी सदस्यों से मिलते हुए विदाई लेता है। शाम को उसका सेवा-निवृत्ति के अवसर पर विदाई समारोह आयोि ात किया गया है। "उसने सो ा, अगर अलखनारायण ने उससे भी बोलने का अनुरोध किया तो वह बताएगा उन्हें उस कारखाने के बारे में, कारखाने के पुरखों के बारे में ि ान्होंने इसकी एक-एक ईंट रखी है, उस ामाने के बारे में ाब सिर उठाने का मतलब सिर कटाना होता था, उन ीतों के बारे में ि ान्हें ीतना आसान नहीं था, उन हारों के बारे में ि ान्हें भूलना आसान नहीं है। वह उन्हें हुनर की इ ात करने के लिए कहेगा, वह उन्हें अपने औ ाारों से प्यार करने के लिए कहेगा, वह उन्हें अपने शरीर की हिफा ात करने के लिए कहेगा। ठेले पर ैनल फेंकता मुल्लू, कैं ा मशीन का ऑपरेटर, पटरी क्रेन वाला लड़का, ग्राइंडर परखड़ा रामलखन उसकी आँखों के आगे घूम गए।"[31] लेकिन म ादूर नेताओं का भाषण समाप्त होते-होते छुट्टी का सायरन ब ा उठा।

---

[30] डाँगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.57

[31] डाँगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.

श्यामलाल अपने समय की मुश्किलें और काम के प्रति निष्ठा की बातें शुरू किया ही नहीं म ादूर घर ाने के लिए बेताब हो उठते हैं। लोग आशीर्व ान का इंत ार किए बगैर ही श्यामलाल का ायकार करते हुए ाले ाते हैं, रुँधे गले से श्यामलाल शून्य में देखते हुए सिर्फ सिर हिलाता रहता है।

शेखर ोशी अपनी कहानियों के द्वारा म ादूर ीवन के विविध दशाओं का, उनके संघर्ष, दुःख-दर्द आदि को प्रस्तुत करते हैं। 'डाँगरी वाले' संग्रह की सारी कहानियाँ म ादूर ीवन संघर्ष की कहानियाँ हैं।

'बदबू' से होते हुए एक म ादूर की यात्रा को 'आशीर्व ान' तक लाते हुए उसके ीवन के सारे अनुभवों, दुःख, संघर्ष आदि को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। शेखर ोशी स्वयं म ादूर थे। इसीलिए उन्होंने स्थितियों का इतना सह ा, सरल एवं स ीव ित्रण किया है। इसी कारण उनकी कहानियाँ प्रसिद्ध एवं बहु ा ित हुई हैं।

2.1.4 अकेलापन

बीसवीं सदी के पाँ ावें-छठे दशक से विश्व भर की मानसिकता में बदलाव आया था। इसी बदलाव को प्रत्येक भाषा के साहित्यकारों ने अपनी शक्ति के अनुसार र ाना के माध्यम से पाठकों के सामने लाने का प्रयास किया। इस बदलाव के मूल में एक ओर दूसरे महायुद्ध के भयावह अनुभव थे, विज्ञान की प्रगति थी, बदलती अर्थ व्यवस्था थी, ब ते शहर थे, भूमिगत संघर्ष था, नैतिक मूल्यों पर होनेवाले आघात थे, टूटते परिवार थे और इन सबके कारण दिन-ब-दिन अकेलेपन का अनुभव करनेवाले व्यक्तियों की संख्या ब ती ा रही थी। वास्तव में अकेलापन औद्योगीकरण, शहरीकरण और इनके दबाव में टूटते सामा िक, पारिवारिक संबंधों के फलस्वरूप पैदा हुई एक समस्या है। इसी समस्या को केंद्र में रखकर नई कहानी के दौर के कहानीकारों ने कथाभूमि

का ायन किया ैसे निर्मल वर्मा, मार्कण्डेय, अमकरांत, भैरव प्रसाद गुप्त, शेखर ोशी आदि।

'हिंदी कहानीःअलगाव का दर्शन (The theme of Alienation in modern hindi short stories)' में नयी कहानी में अलगाव-बोध को दर्शाते हुए गार्डन ार्ल्स रोडरमले ने लिखा है कि-"'नगर की पृष्ठभूमि' में अकेलापन और अलगाव की विषय-वस्तु नयी कहानी में बार-बार आती है खुद लेखकों की तरह उनके पात्र भी कहीं और से बड़े शहर में आये हैं। लेकिन ीवन में यह अलगाव का बोध केवल शहर के कारण ही आये हैं, बल्कि औद्योगिक समा ा ब़ती आर्थिक विषमता, परिवार, स्त्री-पुरुष संबंध में बिखराव, िंदगी की दौड़ में आगे अंधा-धंदे ब़ने की प्रवृत्ति आदि कारणों से भी आया है। यह बोध आगे भी ालता रहता है।"[32]

ाब कोई आदमी अपनी ागह छोड़कर दूसरी ागह बस ााता है। तब वह अपने आप को अ ानबी-सा महसूस करता है और खुद को अकेला िंदगी के साथ लड़ते हुए सो ाता है। मनुष्य अपने बीते हुए ीवन की घटनाओं को बार-बार दोहराता है। "मनुष्य की भावनाएँ बड़ी वि ित्र होती हैं। नि िन, एकांत स्थान में निस्संग होने पर कभी-कभी आदमी एकाकी अनुभव नहीं करता। लगता है, इस एकाकीपन में भी सब कुछ कितना अपना है। परंतु इसके विपरीत कभी-कभी सैकड़ों नर-नारियों के बी ा ानरवमय वातावरण में रह कर भी सूनेपन की अनुभूति होती है। लगता है, ाो कुछ है, कितना अपनत्वहीन। पर यह अकारण ही नहीं होता। इस एकाकीपन की अनुभूति, इस अलगाव की ाड़ें होती हैं-विछोह या विरक्ति की किसी न किसी कथा के मूल में।"[33]

---

[32] हंस, रा ेंद्र यादव, अप्रैल-1990

[33] कहानी की बात, मार्कण्डेय-पृ.23

मानव इसी विरक्ति भावना के कारण पीड़ित होकर ीने की लालसा खो बैठती है। उसके लिए ीना और मरना एक समान होता है। ाब से मानव विरक्ति से अपने-आप को दूसरों से दूर रखते हुए सीमित रहता है तबसे उसका अकेलापन ब ने लगता है।

बीसवीं सदी में आये हुए इस बदलाव के कारण समा ा में एक समस्या खड़ी हो गई है। उसी अकेलेपन को केंद्र में रखकर कई कहानीकार कहानियाँ लिखी थीं। नई कहानी के सभी कहानीकार अकेलेपन को अपनी कहानियों की विषय-वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया है। शेखर ोशी ने भी इसी अकेलेपन को अपनी कहानियों के लिए कथ्य के रूप में अपनाया है।

'दा य' शेखर ोशी की आरंभिक कहानी है। इस कहानी में मदन नामक लड़का नौकरी के कारण पहाड़ी इलाके से शहर में आकर एक होटल में काम करता है। वह शहर में अपने आप को अकेला महसूस करता है तथा उसकी आँखें बराबर किसी ऐसे आदमी की तलाश करती रहती हैं, ि सि वह अपना कह सके। उसी समय उसका परि ाय ागदीश बाबू से होता है। दोनों एक ही पहाड़ी प्रांत से संबंधित होने के कारण दोनों में अपनत्व की भावना ागती है। उसी कारण वह पहाड़ी बालक ागदीश बाबु को दा यु (बड़े भाई) कहता है। कुछ समय के लिए दोनों का एकाकीपन दूर हो ाता है। लेकिन ीवन में ब ता हुआ अलगावबोध और अपनी 'अस्मिता' बनाने की कोशिश के कारण ागदीश बाबू का मध्यवर्गीय संस्कार ाग उठता है। इसी कारण से उसे यह महसूस होने लगता है कि छोटी हैसियतवाला यह पहाड़ी बालक भीड़ भरे होटल में बार-बार 'दा यु' कहकर उसके 'प्रेस्टि ा' को कम कर देता ह। इसी कारण से वह क्रोधित होकर अपनापन छोड़ देता है-" ागदीश बाबू का मुँह क्रोध के कारण तमतमा गया, शब्दों पर अधिकार नहीं रह सका। मदन

'प्रेस्टि ।' का अर्थ सम । सकेगा या नहीं, यह भी उन्हें ध्यान नहीं रहा, पर मदन बिना सम ाये ही सब कुछ सम । गया था।"[34] इस प्रकार उस पहाड़ी बालक का अकेलापन केवल कुछ ही समय के लिए दूर होता है।

शेखर ोशी ने इस कहानी के बारे में लिखा है-" ीवन की परिस्थितियों ने छोटी उम्र में ही मु ो विभिन्न भौगोलिक और सामा ाक परिवेशों में ीने के लिए विवश किया है। छोटी उम्र में ही मातृविहीन हो ाने के बाद पर्वतीय अं ाल के प्राकृतिक सौंदर्य से वनस्पति विहीन रा ास्थान में विस्थापित कर दिए ाने का दुखद अनुभव और अपने परिवेश से कट ाने की कष्टप्रद अनुभूतियों ने मेरी संवेदना की धार तेज़ कर दी। सम । विकसित होने पर अपने नि ी अनुभवों को सामा ाक परिप्रेक्ष्य में देखने की प्रक्रिया आरंभ होने के कारण ाब मैंने 'दा यु' कहानी लिखी तो उसका नायक मेरा ही प्रतिरूप था ो अपने परिवेश से विस्थापित होकर अपरि ातों की भीड़ में किसी आत्मीय को खो । रहा था। लेकिन सामा ाक यथार्थ ने उसे एहसास करा दिया था कि आत्मीय संबंधों के मूल में भी वर्ग स्वार्थ होते हैं ो मानवीय संबंधों में दरार डाल देते हैं।"[35]

यही अकेलापन अथवा अलगाव बोध हमें 'कोसी का घटवार' नामक कहानी में भी मिलता है। यह कोसी नदी के तट (पन ाक्की) के मालिक गुसाई और लछमा की प्रेम कहानी है। ि ासमें आरंभ से लेकर अंत तक अकेलेपन खालीपन और सुनसान वातावरण का ही वर्णन है। नौकरी से लौटे गुसाई ने समय काटने के लिए कोसी नदी के तट पर एक पन ाक्की लगा ली है लेकिन "कभी-कभी गुसाई को यह अकेलापन काटने लगता है। सूखी नदी के किनारे का यह अकेलापन नहीं, ि ांदगी-भर साथ देने के लिए ो अकेलापन उसके द्वार

[34] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.12
[35] हाँगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.10

पर धरना देकर बैठ गया है।"[36] इस अकेलेपन के मूल में गुसाई की असफल प्रेम कहानी है। गुसाई लछमा से प्यार करता है और उससे शादी भी करना ाहता है। लेकिन लछमा का पिता परदेश में बंदूक की नोक पर ान रखने वाले से अपनी बेटी की शादी नहीं करना ाहता है। गुसाई फौ ा में काले बालों को लेकर गया था। ाब वह अपने खि ाड़ी बाल लेकर लौटता है तो पता ालता है कि इस बी ा में लछमा भी विधवा बन गयी है। उसका एक बेटा भी है। अपने पिता को और गुसाई से किशोर उम्र का प्यार खोकर लछमा भी कम अकेली नहीं है। लछमा को न पाने से गुसाई में ाो अभाव और विरक्ति की भावना है वह पूरी कहानी में देखने को मिलती है। ाब दोनों मिलते हैं तब गुसाई लछमा की आर्थिक परिस्थिति ान कर पैसों की सहायता करना ाहता है। लेकिन लछमा इन्कार कर देती है। ऐसी दरारों से भरे किनारों के साथ-साथ बहने वाली कोसी नदी का परिवेश प्रतीकात्मक भी है और उद्दीपक भी। यही बात घट की धीमी ालन की भी है। किसी भी तरह न कटनेवाले अकेलेपन की अनुभूति पूरी कहानी पर हावी है। लछमा से मिलने से उसका अकेलापन थोड़ी देर के लिए ही दूर होता है बाद में वह फिर से अकेली बन ाती है। इस प्रकार पूरी कहानी में गुसाई के अकेलेपन की समस्या अंकित हुई है।

'संवादहीन' कहानी में ताई अपनी बहु-बेटों का शहरों के प्रति मोह के कारण गॉवं में अकेली रहती है। "अपनी अकेली ान के लिए ताई दो ून का एक ून ूल्हा फूँक लेती, व्रत-उपवास के बहाने ौका- ूल्हा टाल ाती, पेट की समस्या उनके लिए कभी समस्या नहीं रही, पर सूने घर की भाँय-भाँय ैसे उन्हें काटने को दौड़ती थी।"[37] ताई अपने इस अकेलेपन को दूर करने के लिए मिट्ठू नामक तोता पालती है। मिट्ठू 'सीताराम' शब्द बोल कर विशिष्ट तोते के

---

[36] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.

[37] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.37

रूप में अपनी उपस्थिति द र्ा करता है। ताई तीर्थयात्रा पर ाते हुए मिट्ठू को ागन मास्टर के घर में रखती है। लेकिन तोता अपनी पक्षीबुद्धि दिखाकर उड़ ाता है। उस स्थान को भरने के लिए ागन मास्टर और एक तोते को लाते हैं ि ासमें कोई विशिष्टता नहीं है। इस प्रकार ताई अपने विशिष्ट तोते को खो कर फिर अकेली पड़ ाती है। इस प्रकार पूरी कहानी में ताई के अकेलेपन और सूनेपर का वर्णन है। इस कहानी के माध्यम से विशेष और सामान्य के बी ा बहुत मोटी लकीर खीं ा कर इस कठिन काम को बहुत ही कलात्मक ंग से शेखर ोशी ने कर दिखाया है।

इसी क्रम में 'रिक्त' कुछ दूसरी तरह की कहानी है। इस कहानी में मीना काले ा में नौकरी करती है। अपने रिटैरमेंट के बाद घर में अकेली रहती है। अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए वह अलग-अलग अखबारों में प्रकाशित एक ही तरह के समा ाारों को तीन-तीन बार प ़ती है ो टी.वी. में भी प्रसारित हो ुके थे। वह अपने-आप को व्यस्त रखना ाहती है। इसीलिए वह बिखरे अखबारों के पन्नों को अपने अकेलेपन का साथी मानती है। वह उन बिखरे पन्नों को मोड़कर क्रमवार मे ा पर लगाये रखती है। इस अकेलेपन के कारण उसके लिए एक दिन बिताना भी कठिन और उसके सामने एक प्रश्न ैसा ही है। मीना अपने ब ापन के दिनों को याद करती हुई सभी की व्यस्तता पर सो ाते हुए प्रस्तुत ीवन में अपनी सहेलियों की व्यस्तता को देखकर ईर्ष्या करती है। वह अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए कुछ समय के लिए मिसे ा साह से मिलने के लिए सो ाती है। लेकिन उसकी बातें सुनकर बाद में उसका मन कडवाहट से भर ाता है। वह अपने मित्रों को पत्र लिखने के लिए बैठती है। मगर उसकी सम ा में नहीं आता कि वह क्या लिखे। वह हारकर बाल्कनी से आते- ाते सवारों को, ब ों को, धोबिन को देखती रह ाती है।

इस से यह स्पष्ट होता है कि वह अकेलेपन से पीड़ित होकर उसका मन भी अकेला और सूना हो ाता है। इस कहानी में कोई 'कहानी' नहीं है बल्कि संपूर्ण कहानी में मीना के सूनेपन और अकेलेपन का ही वर्णन है।

अकेलेपन के कई कारण हैं। 'दा यु' कहानी में अगर हम अ ानबियों के बी ा अपनों को खो ाने वाले लड़के को देखते हैं तो इसके विपरीत अपनों के बी ा में रहते हुए भी अपने-आप को अकेला महसूस करने का पात्र हमें 'ि ाद्दी' शीर्षक कहानी में मिलता है। इस कहानी में रा ोंद्र छोटी उम्र में ही मातृविहीन होने के कारण वह अपने मामा के घर में रहने लगता है ो उनकी मामी के विरुद्ध है। रा ोंद्र के पिता आने के समा ाार से घर के सब लोग उसका पक्ष लेने लगते हैं। मामी तेल लगाकर नहलाती है तो ांदन ीवन में पहली बार रा ु का पक्ष लेकर सल्ली पर आक्रमण करता है। रा ु के व्यवहार से घर में उसकी स्थिति क्या है यह उसके पिता सम ा ाते हैं। लेकिन वह रा ु को अपने साथ नहीं ले सकते यह उनकी म ाबूरी है। ाते समय रा ु उसके साथ ालने की ि ाद्द करता है। लेकिन वह हमेशा की तरह गुम-सुम मौन रह ाता है। इस तरह रा ु अपनों के बी ा रहते हुए भी अपने-आप को अकेला या सूना महसूस करता है। इसीलिए वह कहीं भी ि ाद्द नहीं करता। वह अपने-आप को अकेला महसूस करते हुए सभी ीज़ों या विषयों को स्वीकार करता है। एक मातृविहीन लड़के के दुख-दर्द और अकेलेपन को सफलतापूर्वक शेखर ोशी हमारे सम्मुख 'ि ाद्दी' कहानी के द्वारा प्रस्तुत करते हैं।

शेखर ोशी अकेलेपन को अपनी कुछ कहानियों में कथ्य के रूप में लिया है तो कुछ कहानियों में पात्रों के द्वारा सिर्फ इसका उल्लेख किया है ैसे 'रास्ते' कहानी में ारवाहे के द्वारा, 'कथा-व्यथा' में ीवंती के द्वारा और 'बिरादरी' कहानी में समा ा के अकेलेपन को रेखांकित किया है।

2.1.5 बदलते ीवन मूल्य

बीसवीं शताब्दी में मूल्य शब्द का बड़ा ही महत्व है। सामान्यतः 'मूल्य' शब्द के अर्थ की बात सो ाने से उसका सीधा संबंध किसी वस्तु के कीमत या दाम से होता है। यह आ ा के अर्थ केंद्रित युग के प्रभाव का ही परिणाम है ो दाम या कीमत की ा ार्ि के बिना दैनिक कार्यों में आगे नहीं ब ़ सकते। इसीलिए 'मूल्य' शब्द का प्रयोग सामान्यतः आर्थिक अर्थ के रूप में ही किया ाता है। इसके अतिरिक्त 'महत्व' के अर्थ में भी इस शब्द का प्रयोग किया ा सकता है।

हिंदी में प्रयुक्त 'मूल्य' शब्द संस्कृत की 'मूल' धातु के साथ 'यत्' प्रत्यय संयुक्त कर देने से बना है ि ासका अर्थ कीमत, म ादूरी आदि से होता है।"[38] 'मूल्य' शब्द अंग्रेज़ी के VALERE से बना है ि ासका अर्थ अ छा, सुंदर होता है।

मानव ीवन को साकार और क्रमबद्ध बनाने के लिए समय-समय पर ीवन के कुछ मानदंडों का निर्धारण किया ा रहा है और उन्हीं के आधार पर मूल्य की अवधारणा अस्तित्व में आयी। इससे स्पष्ट है मूल्य का संबंध ीवन से है। अतः मूल्य शब्द का आशय मूलतः ीवन-मूल्य अर्थात् ीवन के मापदंड से ही होता है। साहित्य में ीवन-मूल्यों की ा ार्ि प्रायः समा ाशास्त्रीय अर्थ में ही की ाती है। समा ाशास्त्र की मान्यताओं के आधार पर ीवन मूल्य एक आदर्श ीवन-पद्धति है ि ासका पालन करना समा ा के लिए आवश्यक माना ाता है। किसी भी दृष्टिकोण या वि ाार को ीवन-मूल्य के रूप में स्वीकार करने के लिए उमसें दो विशेषताओं का होना आवश्यक है। एक तो यह है कि वह दृष्टिकोण अर्थात् वै ाारिक सत्य, सुंदर और शिवं से युक्त हो,

[38] हिंदी उपन्यास और ीवन-मूल्य में उद्धृत, डॉ.मोहिनी शर्मा-पृ.1

दूसरे वह मनुष्य के ि ंतन का, उसकी वि ाारणा का परिणाम हो। अतः ाीवन-मूल्य ाीवन के प्रति एक दृष्टिकोण है, ि ासके निर्माण में मनुष्य का व्यक्ति, समा ा और वस्तु के साथ एक वै ाारिक संबंध है ि ासके निर्माण में मनुष्य की मूल प्रवृत्तियाँ और उसके सामा ाीकरण के प्रमुख तत्व ैसे आदर्श, नैतिकता, परंपराएँ, नॉर्म, तथ्य आदि का योगदान होता है। ाीवनम ूल्य से ही मानव संस्कृति सुसंबद्ध और साकार बनती है। समा ा में कुछ लोग आदर्शवादी भावना से प्रेरित होकर यह मान कर ालते हैं कि ाीवन मूल्य स्थिर और शाश्वत होते हैं। लेकिन स ा बात तो यह है कि ाीवन मूल्य न तो स्थिर होते हैं और न ही शाश्वत क्योंकि विकसित समा ा और सभ्यता के साथ-साथ ाीवन-मूल्यों में भी बदलाव होता रहा है। इस बहुआयामी समा ा में ाीवन मूल्यों का बदलाव अनिवार्य और आवश्यक बन गया है। ऐतिहासिक परिस्थितियों में बदलाव आने से ाीवन मूल्यों के स्वरूप में भी बदलाव होता रहता है। इसलिए आ ा के ि ंतक यह मान कर ालते हैं कि ाीवन-मूल्य शाश्वत नहीं हैं। इन्हीं बदलते ाीवन मूल्यों को शेखर ोशी ने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। कुछ आलो ाक शेखर ोशी को आदर्शवादी मानते हैं। सो ाने की बात यह है कि अगर वे आदर्शवादी होते तो उनका यथार्थ आदर्श के फ्रेम से बाहर नहीं आ पाता लेकिन उनकी सारी कहानियाँ यथार्थ के धरातल पर लिखी गई हैं। वे अपने पात्रों के द्वारा यथार्थ को आदर्श से बाहर निकालकर पाठक के सामने रखते हैं।

श्रमिक ाीवन के बारे में रहस्यवादी अवधारणाएँ समा ा और साहित्य में प्र ालित हैं। मसनल म ादूर ईमानदार, मेहनती, सत्यवादी और स्वाभिमानी ही होता है। ये इकहरी अवधारणाएँ हैं ि ानकी परिणति स्याह या सफेद विश्वास में होती है। 'नौरंगी बीमार है' इस कहानी का नौरंगी एक ईमानदार म ादूर का

उदाहरण है। उसकी ईमानदारी पर सब को विश्वास है। बड़े बाबू नौरंगी की ईमानदारी पर विश्वास प्रकट करते हुए कहते हैं कि-"बहुत ईमानदार आदमी है साहब नौरंगी मिस्त्री। मैं आपको एक पुराना डेलीआर्डर दिखाऊँगा। ार-पाँ ा साल पहले की बात है। तब महेंद्र सिंह साहब थे यहाँ, उन्होंने गलती से इन्हें ार सौ रुपया यादा दे दिया था। वे वर्कशॉप में गए, एक-दो बार रुपया गिना, लगा कि कुछ गड़बड़ है। वापस कर गए तत्काल। कहाँ मिलते हैं ऐसे लोग, इस ामाने में। ीफ साहब खुद यहाँ आकर उन्हें शाबाशी और ईनाम दे गए थे, इनसे हाथ मिलाया था।"[39] इतना ईमानदार आदमी भी एक मूल्य छोड़कर दूसरा मूल्य अपनाता है। वह भी पे-काउंटर से मिले अधिक पैसे दबा लेता है। बात छिपाने के लिए और लोगों की टीका-टिप्पणिी से ब ाने के लिए बीमारी के बहाने से छुट्टी ले लेता है। ाब साथी उसे देखने घर पहुँ ाने लगते हैं तो वह बीमारी का बहाना छोड़कर ठसके से काम पर लौट आता है। म ादूर ि ासे हम ईमानदारी का प्रतीक मानते हैं वे भी इसी ाटिल समा ा के ही अंग हैं और उनमें भी ाटिलताएँ उतनी ही हैं इसीलिए म ादूर भी बदलता है और वह एक मूल्य छोड़कर दूसरा मूल्य अपनाता है। इस प्रकार शेखर ोशी ईमानदार म ादूर व्यक्ति का ईमानदारी से बेईमान तक की इस यात्रा को यथार्थ के आधार पर निस्संको ा अपनी कहानियों में व्यक्त करते हैं। मगर हम यह नहीं कह सकते हैं कि हर म ादूर ईमानदार से बेईमान बनता है। कुछ ऐसे भी म ादूर होंगे ो परिस्थितियों के प्रभाव से बदलते हैं।

' ी ह ूरिया' कहानी में ापरासी यह मान कर ालता है कि उक्त आदर्श ापरासी को सिर्फ विनम्र बनाता है इसलिए वह आदर्श बनने के मोह में सभी को खुशामदी और मक्खनबा ी करता रहता है। लेकिन अपने साथी की

[39] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.91

मृत्यु पर अफसर की बातें सुनकर वह अपना आक्रोश संभाल नहीं पाया और अफसर से तं ा और तुर्शी से भरी बातें कर बैठता है। इससे यह पता ालता है कि एक ापलूस म ादूर ो आदर्श बनने का प्रयत्न करता है वह भी परिस्थितियों के प्रभाव से आदर्श को छोड़कर यथार्थवादी बन ाता है। इस प्रकार शेखर ोशी बाह्य और आंतरिक परिवर्तनों पर निरंतर अपनी नज़र रखते हैं।

'गलता लोहा' सवर्ण म ादूरों और पिछड़े दस्तकारों के बी ा ब.ती व्यावसायिक नज़दीकी, परस्पर स्वीकृति की ही कहानी नहीं है बल्कि वह हमें बताती है कि समा ा का नया स्तरीकरण भी श्रम ही करता है। इस कहानी में गरीब ब्राह्मण ांद्रदत्त का बेटा मोहन प.ने में कुशाग्र है। गंगाराम लुहार का भोंदू बेटा धनराम उसका सहपाठी है। स्कूल मास्टर त्रिलोक सिंह मोहन की सवर्ण मेधा पर विश्वास करते हैं कि ब्राह्मण का बेटा है तो प.ं ही ाएगा। मोहन आगे की प.ाई के लिए लखनऊ ाता है। मगर ि ास पहाड़ी भाई ने नौकर ैसे बनाकर साथ रखा। मोहन बी.ए. पास करने की ब ााय आई.टी.आई. से टेक्निकल ट्रेनिंग करके नौकरी करता है। गाँव लौट कर एक दिन हंसुए की फाल ते ा करने लुहार मित्र धनराम के पास पहुँ ो। धनराम लोहे की छड़ को गर्म कर मोड़ने की कोशिश कर रहा था, पर वह ंग से हो नहीं पा रहा था। टेक्नीशियन मोहन ने ाटपट उस छड़ को सुघड़ता से मोड़ डाला। इस प्रकार ब्राह्मण का बेटा सभ्यता की दौड़ में पुराने पड़ गए विश्वासों और अवधारणाओं को छोड़ते हुए तकनीकी की ओर ब.ता है। शेखर ोशी को इस प्रकार होने वाले सह ा परिवर्तनों पर विशेष रु ा है। इसीलिए अ ानक होनेवाले इस बदलाव पर अपनी सहमति को कहानी के अंत में प्रकट कतरे हैं।

"उसकी आँखों में एक स कि की ामक थी-ि ासमें न स्पर्धा थी और न ही किसी प्रकार की हार- ीत का भाव।"[40]

'डांगरीवाले' एक म ादूर परिवार की कहानी है ो धीरे-धीरे आधुनिकता की ओर ब ़ रहा है। परमेश्वर डांगरी पहन कर कारखाने में काम करता है। उसका बेटा प ़-लिखकर इं ािनियर बनता है। वह अपने परिवार को मध्यवर्ग से उ ा वर्ग में पहुँ ाने के लिए निरंतर प्रयत्न करता रहता है। इसीलिए वह घर में डाइनिंग टेबुल लाता है और अपनी शादी में आधुनिक पद्धति से बुफे और एट-होम रखता है। परमेश्वर को ये सब पसंद नहीं है। वह विवश होकर परिवारवालों की खुशी के लिए इस बदलाव को स्वीकार करता है। आधुनिक वि ारधारा के प्रभाव के कारण ीवन की स्थिति में परिवर्तन आया है। इसीलिए इस कहानी में परमेश्वर भी इस बदलाव को स्वीकार करता है। वह भी यह ानता है कि वही ब ाता है ो समय के साथ ाल सकता है। केवल वह ही नहीं उनके साथी ि ासे परमेश्वर का इं ािनियर बेटा पिछड़ा सम ाता था वे लोग भी इस बदलाव को स्वीकारते हुए खड़े-खड़े प्लेट- ाम्म ा से खाते हैं। उनहें देखकर इं ािनियर ाकित होता है। इस से स्पष्ट होता है कि मनुष्य आधुनिक वि ारधारा के कारण स्थितियों के अनुकूल अपने मूल्य बदलते रहते हैं। शेखर ोशी इस प्रकार होनेवाले परिवर्तनों पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि-"बरामदे में तख्त पर बैठे-बैठे खपरैल की छवान की ओर ताकते हुए सो ाने लगे, ी ों धीरे-धीरे कैसे बदल गई हैं। अ ानक होनेवाले बदलाव से उन्हें हमेशा डर लगा रहता है, ैसे किसी अनिष्ट की आशंका हो, लोगों की नज़र लग ाने का डर हो। पूरा घर पक्का सीमेंट का हो गया है। एक-एक वर्ष के अंतराल में ाीज़ें बदलती गई है।"[41]

---

[40] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.80

[41] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.97

इस आधुनिक समा ा में आधुनिक वि ाारधारा से प्रभावित व्यक्ति प्रा ाीनता से नवीनता की ओर अग्रसर होता है। ैसे प्रा ाीनकाल में आस्था और विश्वास एक महत्वपूर्ण मूल्य था। किंतु आधुनिक गतिशील युग में इस मूल्य की कोई कीमत न रही और मूल्य का संक्रमण आ ा अनास्था और अविश्वास में हो गया। आधुनिक मानव का मन केवल उन्हीं मूल्यों को मानने के लिए तैयार है ाो उसे भौतिक सुख प्राप्ति के लिए सहायक हो। इस प्रकार भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए एक धार्मिक व्यक्ति किस प्रकार अपने मूल्य बदलता है यह हम 'किं करोमि ानार्दन' शीर्षक कहानी में देख सकते हैं।

'किंकरोमि ानार्दन' का नित्यानु यु एक धार्मिक व्यक्ति ह। वह सांसारिक ाीवों के प्रति किसी प्रकार का अन्याय न करने और असत्य प्रलोभन आदि विकारों को त्याग देने का संकल्प लिया था। कहानी में समस्या इसी विषय को लेकर उठती है। घर के सभी सदस्य पड़ोसी, गाँव में होनेवाले विवाह उत्सव में भाग लेना ाहते हैं। मगर सेब के पेड़ों की रक्षा के लिए किसी को घर में रहना अनिवार्य है। इसी विषय को लेकर घर की बहुओं के बी ा वाद-विवाद होता है। घर की बड़ी बहु अपने श्वसुर की निंदा करते हुए कहती है कि-"हाँ, बड़े धर्मात्मा हैं। सर्दियों में एक दिन भी नहाया नहीं, बण्डी पहने ही ौके में भात खाने बैठ ाते थे, आ ा एक छोटी-सी बात के लिए उनका धरम बिगड़ ाएगा।"[42] इससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक वि ाारधारा वाला मानव अपनी सुविधाओं के लिए धार्मिक मूल्यों का भी खंडन करता है। घर की इस समस्या को हल करने के लिए स्वयं नित्यान य अपने ाीवन मूल्यों को बदल कर बगी ो की रखवाली का काम अपनाता है। इससे घर का वातावरण प्रसन्न हो ाता है। इस प्रसन्नपूर्ण वातावरण के लिए नित्यान य अपने पुराने

[42] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.37

मूल्यों को छोड़कर नये मूल्य अपनाता है। इससे यह पता ालता है कि आधुनिक वि ाारधारा वाला मानव अपनी सुविधाओं के अनुसार प्रा ाीन मूल्यों को न करते हुए नवीन मूल्य अपनाता है। इस नवीन मूल्यों के पीछे अस्तित्ववादी वि ाारधारा समाविष्ट है।

इस आधुनिक समा ा में सभी लोग अपना एक अस्तित्व बनाये रखना ाहते हैं। ाब उनके अस्तित्व को कोई ठेस पहुँ ाती है, तो वह प्रा ाीन मूल्य छोड़कर नवीन मूल्य अपनाता है। इस बदलते ाीवन मूल्यों के मूल में आधुनिक वि ाारधारा है। आधुनिक वि ाारधारा के प्रभाव के कारण ाीवन की स्थिति में परिवर्तन आया है। स्थितियाँ, संदर्भ और प्रसंग के अनुसार मानव ाीवन में बदलाव आया है। यही हमें 'हैड मासिं ार मंटू' नामक कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी में मंटू एक ापरासी है। वह अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए हमेशा कोशिश करता है। अपने-आप को ऊँ ा दिखने के लिए वह कहता है कि-"ब्लडी बीडी पीता है, सिगरेट पियो। नहीं है तो हम से लो। बड़ा-बड़ा इं ानियर लोग-सीनियर मासिं ार मंटू से सिगरेट माँग कर पीता है।"[43] इसी प्रकार अपना महत्व ातलाते हुए कहता है-"बड़ा बाबू नहीं रहता तो छोकरा बाबू लोग फोन नहीं उठाता-डरता है। फोन पकड़ने का भी तमी ा नहीं। दस बार हलू-हलू बोलेगा। डरना क्या। हम नहीं डरता-यस, यस, सीनियर मासिं ार मंटू बोलता।"[44] मंटू अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा बनाए रखते हुए साथ में सभी को ाहाँ तक कि अफसर लोगों को भी आला आफीसर कहते हुए नी ाा दिखाता है। इस प्रकार अपने महत्व पर बल देनेवाले मंटू को ाब मैने ार विश्वनाथ अपने कलम के बारे में पूछता है तब मंटू बाहर आकर गुस्से से तिलमिला ाता है। उसका गुस्सा तभी शांत होता है ाब मैने ार को अपने

[43] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.
[44] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.

मित्रों के द्वारा अपमानित करता है। इस तरह अस्तित्ववादी वि ाारधारा से प्रभावित होकर मंटू विनम्रता के मूल्य छोड़कर नवीन मूल्यों को अपनाते हुए मैने ार साहब पर प्रतीकार लेता है।

2.1.6 आधुनिक समा ा

आधुनिक समा ा में मानव अपने अस्तित्व के प्रति स ाग हुआ। ि ासके कारण वह सारे विषयों को अपने केंद्र में रखकर देखने लगा। वह समा ा में अपना एक अलग अस्तित्व बनाये रखना ाहता है। समा ा के इस परिवर्तन को शेखर ोशी अपनी कहानियों के कथ्य के रूप में स्वीकार किया है। 'साथ के लोग' कहानी इस सामा ाि क मर्म को खोलकर सामने रख देती है। इस कहानी की तीन घटनाओं के द्वारा समा ा में व्याप्त ईर्ष्या, अहं, सामा ाि क द ा आदि समस्याओं को लेखक हमारे सामने प्रस्तुत करता है। इस कहानी का आरंभ एक व्यापारी का रेल डिब्बे में प्रवेश होने से होता है। वह ामकती हुई आकर्षक ीज़ निकालकर यात्रियों को बोली लगाने के लिए आमंत्रित करता है। उस बोली में एक ग्राहक को इनाम के रूप में ाम ामाता हुआ पंप शू मिलता है। ि ास पर ईर्ष्या प्रकट करते हुए कई यात्री अपना-अपना मत प्रकट करने लगते हैं। उसी समय दो नवयुवक अपने महत्व को ातलाने के लिए बेयर पर ि ाल्लाने लगते हैं तो बेयर अपना पक्ष सुनाकर उन्हें निरुत्तर कर देता है। उन नवयुवकों की बात- ीत में उनका अहं व्यक्त होता है। कहानी की तीसरी घटना में बिना टिकट यात्रा करनेवाले बू े को ोकर पाँ ा रुपया ुरमाना लगता है। वह बू ा उन पैसों के लिए सभी से सहायता माँगता है। एक विद्यार्थी उसे दयनीय ोहरे पर अपने पिता की छवी देखकर सहायता करना ाहता है। "लेकिन आसपास बैठे हुए लोगों की नैतिक मान्यता और अपने इस असाधारण व्यवहार के लिए सबकी नज़रों में हास्यास्पद बन ाने की आशंका से उसने मन

मसोसकर ुप्पी साध ली और बलि-पशु की तरह ले ाए ाते बु े को ला ार देखता रहा।"[45] और अपनी इस गलती का समर्थन करते हुए वह मन-ही-मन विश्वास करने लगता है कि-"एकांत में बू े से एक रुपया लेकर ही ोकर उसे अगले स्टेशन पर छोड़ देगा।"[46] इस कहानी के द्वारा सामान्य मनुष्य की समा ा के साथ ो मुठभेड़ होती है उसे हम देख सकते हैं।

आधुनिक काल को वैज्ञानिक काल भी कहा गया है क्योंकि इस काल में कई वैज्ञानिक हमले हुए हैं। इन वैज्ञानिक हमलों का प्रभाव समा ा पर पूरी तरह पड़ा है। आ ा के आधुनिक समा ा में व्याप्त वैज्ञानिक हमले और उस पर मानव की खोखला मनःस्थिति को हम 'विडुआ' शीर्षक कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी में दिग्वि ाय अपनी ि ाद पर शादी में वीडियो निकालता है। दो दिन बाद उसे देखते हुए एक दूसरे से इस प्रकार कहने लगते हैं-"वो देखो नरेंदर, कैसा भकर-भकर खा रहा है।

वह दिग्वि ाय भैया है, कैसे टे े-टे े खड़े हैं।

अरे, वह देखो ुरिया। बिलकुल साहब बनकर प्लेट ाम्म ा से खा रहा है।"[47]

एक शादी में फिल्माए गए वीडियो टेप को देखने की ललक भर से पूरा सामाि ाक परिवेश उपस्थित कर देते हैं। बीते हुए समय को आ ा देखते हुए कल तक सुरक्षित रखने की इ ा की तरह नहीं देखकर केवल अपनी उपस्थित को बार-बार दोहराने की हल्की हरकत की तरह लिया गया। 'विडुआ' आ ा के समा ा में व्याप्त खोखली मनःस्थिति को स्पष्ट करती है। यही खोखलापन हमें 'दौड़' शीर्षक कहानी में भी मिलता है। इस कहानी में 'कोर दिवस' के

---

[45] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.22
[46] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.22
[47] नौरंगी बीमार है, शेखर ोशी-पृ.44

आयो ान में 'मटका रेस' रखते हैं ि ासमें तीन पण्डाल के महिलाएँ भाग लेती हैं। पहले दो पण्डाल की महिाएँ संको ा का अभिनय करते हुए मैदान में उतरती हैं तो तीसरे पण्डाल की महिलाओं के लिए किसी औप ाारिकता की आवश्यकता नहीं है। रेस में भाग लेते हुए अ ानक पहले और दूसरे पण्डाल की महिलाएँ एक के बाद एक मटका बिखरा देती हैं। "उनके ोहरों पर परा ाय की छाप नहीं थी, वरन् उन्हें देखकर ऐसा लगता था ौसे उन्होंने दौड़ में अब भी भाग ले रही शेष महिलाओं को अपनी कमनीयता से पराि ात कर दिया हो।"[48] अब मैदान में केवल देहात की तीसरे पण्डाल की महिलाएँ हैं ि ानका लक्ष्य अब सभी को पीछे छोड़कर पुरस्कार प्राप्त करना है। पहले दो पण्डाल की महिलाओं के ारित्र में समा ा में व्याप्त खोखलेपन को देख सकते हैं।

'निर्णय' कहानी आ ा के समा ा के खोखलेपन को स्पष्ट करते हुए उन कारणों पर भी बारीकी से नज़र डालती है। इस कहानी में श्रीधर ो शहर में अ छी नौकरी पर है वह अपने गाँव देहात को स ाने-सँवारने में अपना योगदान देना ाहता है। इसी उद्देश्य से वह शहर छोड़कर गाँव आता है। थोपा हुआ आदर्श व्यवहार में ाब उतरता है तो कई ागहों से उसे घटिया और क्रूर स्थितियों का सामना करना पड़ता है। यही श्रीधर के विषय में भी होता है। गाँव के सभी लोग श्रीधर को पोलिटीशियन के रूप में देखते हैं। वैसे भी आ ा के गाँव शहरों से ाटिल तथा असुरक्षित हो गये हैं। हमारा संस्थागत ीवन ारित्र और उस पर निर्भर रहने की सामाि ाक आदत ने गाँव के सौंदर्यबोध को नष्ट कर दिया है। ऐसे में उसमें ीने और रहने की इ छा अ ानक सामान्य से विशिष्ट बन ाती है। शेखर ोशी ने इस आदर्श को व्यावहारिक बनाने की कोशिश की है। श्रीधर की मार्फत अंधकार को ीर कर किरण की तलाश करने

[48] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.45

की ो इ छा उन्होंने बनाई है वह बेहद ारूरी है। पर वह स्थिति यथार्थपूर्ण नहीं है। संभवतः इसीलिए शेखर ोशी यहाँ अपनी उस विश्वसनीय भाषा का प्रयोग नहीं कर पाए हैं।

'निर्णायक' कुछ इसी प्रकार की कहानी है। इस कहानी में बास अपने एक कर्म ारी को एक और मौका देकर उसे सुधारना ाहता है। थोपे हुए आदर्श के कारण कर्म ारी कुछ दिनों के लिए विनम्र बनने का नाटक करता है। अंत में वह कर्म ारी अपने व्यवहार को सामने लाते हुए कहता है-"ि ांदगी? यह कुत्ते की ि ांदगी है-मेरी भी, तुम्हारी भी और उस साले बॉस की भी ि ासे तुम खुदा सम ाते हो।"[49] बॉस का थोपे हुए आदर्श के कारण उसे इस प्रकार की क्रूर और घटिया स्थितियों का सामना करना पड़ता है।

आधुनिक समा ा में हमेशा कई परिवर्तन होते रहते हैं। 'बिरादरी' कहानी इसी सामाि ाक परिवर्तन के नए रूप को हमारे सामने लाती है। इस कहानी में ीवन और हरिप्रिया के बेटे रा ु की विवाह तिथि तय होती है। विवाह के पहले दिन तक बिरादरी के लोग न आने के कारण ीवन बारात में ाने के लिए आस-पास के ाने-पह ाने लोगों को तैयार करता है। लेकिन विवाह के दिन अपनी बिरादरी के लोग आने से ीवन बारात में अपने बिरादरी के लोगों को भे ाना ाहता है तो हरिप्रिया इस का विरोध करते हुए कहती है कि-"बिरादरी एक दिन की नहीं होती, हमारे तो असली बिरादर अब वे ही हैं ि ासके साथ हमारा मरना- ीना लगा है, उन्हें छोटा कर परदेसी बिरादरों की फिकर करोगे तो ये भी अपने न रहेंगे और वे भी।"[50] इस प्रकार हरिप्रिया बिरादरी का नया अर्थ बताती है। 'बिरादरी' कहानी के माध्यम से शेखर ोशी न केवल रू ़ मूल्यों की पुनर्र ाना करते हैं बल्कि उसे नए संदर्भ में स्थापित भी

---

[49] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.70

[50] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.79

करते हैं। हमारे वर्तमान सुख-दुःख तथा ीवन की आवश्यकताओं में शामिल ान-संसार ही हमारी वास्तविक बिरादरी है। वह अतीत के रिश्तों पर तय लोगों की ामात बिरादरी नहीं होती। बिरादरी को इस रूप में देखना बेहद नया है आवश्यक सामाि ाक संसार र ाने ैसा है ि ासमें मनुष्य की ऊ ाा, पह ाान और कर्म के बी ा आधुनिक सो ा नज़र आती है।"[51]

आधुनिकता का ही एक रूप मृत्युबोध है। इस विषय पर भी शेखर ोशी अपनी कहानी 'मृत्यु' में लिखा है। इस कहानी के तीनों पात्र मैं नामक पात्र, कौस्तुभ और शकून शनिवार की उस शाम रात तक बारी-बार से मृत्यु के उन क्षणों पर ा ाा करते रहे ि ानके वो पृथक-पृथक रूप में साक्षी रहे थे। लेकिन उनमें से किसी ने भी मृत्यु के उन क्षणों की ा ाा नहीं की ि ानके वो तीनों संयुक्त रूप में साक्षी रहे थे।

शेखर ोशी ने आधुनिक समा ा की यौवन समस्याओं पर भी कहानियाँ लिखी हैं। 'प्रथम साक्षात्कार' यौवन समस्यओं की ही कहानी है। इस कहानी में एक किशोर और यौवन की वयःसंधि की लड़की को प्रेम पत्र किस प्रकार प्रभावित करता है और उस पत्र से उसका वैवाहिक ीवन किस प्रकार विघटित होता है, यह कहानी इस विषय को स्पष्ट करती है। इस कहानी में प्रफुल्ल और ाया कई कठिनाइयों के बाद प्रेम विवाह करते हैं। लेकिन एक दिन प्रफुल्ल को ाया के किसी प्रेमी का पत्र मिलता है तो उनके परिवार का विघटन होता है। वह ाया के युवावस्था के प्रारंभिक दिनों के रवि नामक लड़के का प्रेम पत्र था। ाया को रवि का यह व्यवहार अ छा नहीं लगा। लेकिन "वह पत्र तब ाया को कैसी अनोखी अनुभूति से भर गया था। तब पहली बार उसने गौर से अपने अंग-अंग को देखा था। आत्ममुग्ध-सी वह देर तक आईने को देखती ही रह गई

---

[51] साक्षात्कार, फरवरी-मा ि 93

थी। उस दिन अ ाानक ही वह आत्मविश्वास से भर उठी थी। ाीवन का प्रत्येक कार्य-व्यापार उसे रु ाकर लगने लगा था। आ ा उस युवक का ोहरा-मोहरा भी उसे ठीक तरह याद नहीं और फिर न कभी ाीवन में उससे ाया की भेंट ही हुई। लेकिन इस पत्र से ुड़ी पहले आत्म-साक्षात्कार की वह अनुभूति ही ाया के मन में ाीवन भर के लिए ैसे एक सुगंध भर गई थी।"[52] आ ा इस पत्र के कारण पारिवारिक विघटन होने पर भी ाया उस पत्र को ाह कर भी फाड़कर टुकड़े-टुकड़े नहीं कर पाती है। इस प्रकार शेखर ोशी यौवन समस्याओं को कलात्मक ंग से हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं।

अतः शेखर ोशी 'नयी कहानी' के दौर के कहानीकार होने पर भी अपने आप को तथाकथित अस्तित्ववाद को आधुनिकता के दायरे से मुक्त रखा है। इसीलिए उनकी कहानियों में आधुनिक खोखलेपन के प्रति अपना विरोध कहानी के पात्र के द्वारा ही पाठकों के सामने लाने का प्रयत्न किया गया है। उनकी 'विडुआ', 'दौड़' आदि कहानियों में इस विषमता को हम देख सकते हैं।

2.2 शिल्प

तात्पर्य और स्वरूप

'शिल्प' शब्द अंग्रेज़ी भाषा के 'टेकनीक' शब्द का हिंदी रूपांतरण है। सामान्य अर्थ में यह एक तरीका अथवा ंग है। साहित्य में शिल्प का अत्यन्त महत्व है। र ानाकार शिल्प के द्वारा अपनी कथा-वस्तु को अलंकृत करता है। शिल्प के बिना कोई भी र ाना सफलता प्राप्त नहीं कर सकती। शिल्प कलात्मक निर्वाह के लिए साधना की एक प्रणाली है। शिल्प का संकु ित अर्थ निर्माण

[52] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.129

करना अथवा र ाने का ंग है। लेकिन साहित्य-क्षेत्र में इसका अर्थ किसी कृति को कलात्मक ंग से र ाने के अर्थ में माना ा सकता है।

'शिल्प' शब्द की व्युत्पत्ति संदिग्ध है। 'उणादी कोश' के अनुसार "'शिल्प' शब्द शील समाधौ धातु से 'प' प्रत्यय और शील को हस्व लगाकर बनता है।"[53] अमरकोश में "'शिल्प' को 'कर्मकादिकम' कहा है।"[54] वी.एस.आप्टे के मतानुसार-"इस शब्द की व्युत्पत्ति शील्+अक है।"[55] हलायुध कोश में इसका अर्थ "'क्रियाकौशलम' के रूप में दिया गया है।"[56] शिल्प शब्द का शाब्दिक अर्थ बृहत् हिंदी कोश में इस प्रकार बताया गया है-"शैली, कार्य पद्धति, विशेष उपाय, यंत्र ातुर्य, प्राविधि।"[57] शिल्प के लिए रूपकार शब्द का भी प्रयोग है, क्योंकि र ानाकार शिल्प के द्वारा ही किसी भी र ाना को एक आकार अथवा रूप प्रदान करता है।

शिल्प अभिव्यक्ति का एक माध्यम है ि ासके द्वारा र ाना में सौंदर्य का उद्भव होता है। शिल्प के बिना साहित्य में विकास संभव नहीं हो सकता। र ाना में शिल्प का प्रयोग ि ातना सरल और सटीक होगा उतनी ही उस कृति में स ाीवता होगी। र ानाकार अपनी बात को सीधा और सरल तरीके से न कहकर अनेक उपकरणों की सहायता लेता है। उनमें से शिल्प एक है। वह उन उपकरणों से अपनी कृति को सशक्त एवं प्रभावशाली बनाता है।

शिल्प को कई विद्वानों ने अनेक प्रकार से परिभाषित किया है। ैनेंद्र कुमार ने टेकनीक से संबंधित अपनी कृति में कहा है कि "टेकनीक एक ाँे के नियमों का नमा है। पर ाँे की उपयोगिता इसी में है कि वह स ाीव मनुष्य के

---

[53] उणादिकोश-13/28

[54] अमर कोश, सं.शक्तिधर शास्त्री-पृ.349

[55] V.S.Apte, Sanskrit-English Dictionary-p.3 h 1554

[56] हलायुध कोश-पृ.593

[57] बृहत हिंदी कोश, ज्ञान मंडल लिमिटेड, बनारस-पृ.1750

ीवन में काम आए, वैसे ही, 'टेकनीक' साहित्य-सृ ान में योग देने के लिए है।"[58]

शरद ोशी ने शिल्प के संबंध में अपने वि ाार इस प्रकार व्यक्त किये हैं। "शिल्प तो एक लिविंग प्रोसेस है। यदि लिविंग प्रोसेस-वह विकसनशील प्रक्रिया अपने-आप में कहीं रुक ाये तो शिल्प मुर्दा हो ायेगी।"[59]

लिथोन सर्सेलियन ने शिल्प के बारे में कहा है-"शिल्प स ो अर्थ में वह माध्यम है, ि ासके ारिये लेखक अभिव्यक्ति के लिए बाध्य करनेवाली अपनी सारी अव्यक्त अंतःप्रेरणाओं के बी ा यथार्थ तौर पर यह अनुभव करता है कि मैं क्या कहना ाहता हूँ। यह वह माध्यम है ि ासके उसकी र ानात्मकता एक रूप रंग पकड़ पाती है।"[60]

डॉ.छेटीलाल पाण्डेय ने कहा है कि-"भावों के अंतिम रूप पाने तक ो भी प्रयास है वे सब शिल्प कहे ायेंगे।"[61] आधुनिक साहित्य के शिल्प के संबंध में डॉ.एम.एल.मेहता के अनुसार-"आ ा के साहित्य का शिल्प क्या है? मेरा तत्काल उत्तर हैःइंद्रिय सं ोतना। ... नयी कहानी एक ओर यही सही ंग से ग्रहण करता है तो दूसरी ओर सार्थक अभिव्यक्ति को कलात्मक मोड़ देता भी है।"[62] अतः स्पष्ट है कि किसी विषय को सीधा न कह कर कहानी में शिल्प के द्वारा विषय या सार्थक अभिव्यक्ति को कलात्मक ंग से बताते हैं ि ासके द्वारा पाठकों में उस कृति को प. ने की ि ाज्ञासा और आकर्षण ब. ता है। शिल्प

---

[58] साहित्य का श्रेय और प्रेय, ैनेंद्र कुमार-पृ.370
[59] ज्ञानोदय, फरवरी 66, शरद ोशी
[60] टेकनीक्स ऑव फिक्शन राइटिंग, लियो ान सर्सेलियन, मार्क शोटर लिखित भूमिका-पृ.161
[61] छायावादोत्तर काव्य शिल्प, डॉ.छेटीलाल पाण्डेय-पृ.18
[62] स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानीःवस्तु विकास एवं शिल्प विधान-पृ.243

की कमज़ोरी साहित्यकार के अधूरे ज्ञान एवं उस कृति के विषयी ज्ञान के अभाव को प्रदर्शित करता है।

शिल्प का स्वरूप

र ानाकार किसी कृति की र ाना के लिए विषय को ूँ.ता नहीं। वह अपने ीवन में घटित किसी एक घटना को शब्दों के आकर्षक ाँो में रखकर सह ा ंग से समा ा के सामने प्रस्तुत करता है। वस्तुगत घटना को रूपायित करने के लिए अनेक उपकरणें की सहायता लेनी पड़ती है। इन उपकरणों को ही र ाना का शिल्प तत्व कहा ाता है। इन तत्वों का विस्तृत विवे ान एवं संगठित रूप ही शिल्प का स्वरूप है।

सृ ानशील लेखक की र ाना-प्रक्रिया में शिल्प के सभी उपकरणों का स्वाभाविक प्रयोग होता है। विद्वानों ने शिल्प के कथानक, कथोपकथन, पात्र एवं ारित्र-ि ात्रण, देशकाल एवं वातावरण, भाषा, शैली तत्व प्रमुख रूप से स्वीकार किए हैं। बाद में इन तत्वों के साथ-साथ प्रतीक और बिंब को भी सम्मिलित किया गया है। र ानाकार के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह सभी तत्वों का प्रयोग करे।

कथानक

कहानी के शिल्प का प्रथम अंग कथानक है। शिल्प के अनेक तत्वों में से इस तत्व का अधिक महत्व है। क्योंकि इस तत्व के अभाव में शिल्प स्वरूप का विवे ान ही नहीं किया ा सकता। सभी उपकरण इसी तत्व पर आधारित हैं। कथावसतु को संगठित एवं सशक्त बनाने के लिए शिल्प के अन्य तत्वों की सहायता ली ाती है। किसी भी कहानी की सफलता उसकी कथावस्तु पर और किसी भी कथा-वस्तु की सफलता उसके शिल्प पर आधारित है। र ानाकार शिल्प के द्वारा कथा-वस्तु में कौतूहल एवं उत्सुकता लाता है। कथावस्तु के

प्रस्तुतीकरण में संक्षिप्तता, मौलिकता, रो ाकता, क्रमबद्धता, विश्वसनीयता, उत्सुकता, कौतुलता, शिल्पगत नवीनता, प्रभावात्मकता आदि विशेषताओं का बहुत महत्व होता है। कथाकार इन सारी विशेषताओं के सहारे कथा-वस्तु को कलात्मक ंग से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

शेखर ोशी समय के साथ समा ा में होने वाले परिवर्तनों को उनकी कहानियों की कथावस्तु के रूप में स्वीकारा है। वह अपने अनुभवों के आधार पर कहानियाँ लिखी हैं। 'दा यू' उनकी वैसी ही कहानी है। उन्होंने मध्यवर्ग, बदलते ीवन मूल्य, औद्योगिक परिवेश, पहाड़ केंद्रित कहानियाँ लिखी हैं। उन्होंने छोटे-छोटे विषयों पर भी कहानियाँ लिखी हैं। ैसे ब ों के डर पर 'आदमी का डर', पहाड़ों के रास्तों पर 'रास्ता' और एक युवनावस्ता की लड़की पर प्रेम पत्र किस प्रकार प्रभाव डालता है इस पर 'प्रथम साक्षात्कार' आदि कहानियाँ लिखी हैं।

<u>पात्र एवं ारित्र ित्रण</u>

कथा-वस्तु के बाद पात्र एवं ारित्र-ित्रण कहानी का विशिष्ट तत्व है। कहानीकार शिल्प के विभिन्न उपकरणों से पात्रों का परि ाय एवं उनका ारित्र-ित्रण पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। कहानीकार पात्रों का ारित्र विश्लेषण कहानी की अंतिम घटना तक करना ाहता है िससे पात्रों का संपूर्ण ीवन- ारित उद्घाटित होता है। किसी भी र ानाकार की कथावस्तु एवं ारित्र-ित्रण में ितनी स्वाभाविकता, मौलिकता, स ीवता, यथार्थता होगी उतनी ही वह र ाना उत्कृष्ट होगी। लेखक किसी भी घटना का ायन एवं उसमें वर्णित पात्रों का वर्गीकरण स्वयं करता है। ैसे प्रमुख पात्र, सहायक पात्र, पुरुष पात्र, स्त्री पात्र, खलपात्र, यथार्थवादी पात्र, मनोवैज्ञानिक पात्र, रा ानैतिक पात्र, ऐतिहासिक पात्र आदि। र ानाकार इन सभी पात्रों को नज़र में रखते हुए अपनी

र ाना को आकार एवं रूप प्रदान करता है। पात्र एवं ारित्र-ित्रण कहानी की कलात्मकता को व्यंि ात करने के साथ-साथ उसके आदर्श एवं भाव को भी प्रकट करते हैं। पात्रों के द्वारा ही कथावस्तु को अभिव्यक्त किया ाता है। कहानी की अपेक्षा नाटक विधा में पात्र एवं ारित्र-ित्रण का विशेष महत्व रहता है। क्योंकि नाटक में पात्रों के बिना कथावस्तु आगे ब. ही नहीं सकती। कहानियों में पात्र एवं ारित्र-ित्रण ैसे शिल्प उपकरण को नकारा नहीं ा सकता। पात्रों के द्वारा ही पाठक ज्ञाना ि कर अपने आपको परिवर्तित करते हैं। इसीलिए यह तत्व महत्वपूर्ण है।

शेखर ोशी की कहानियों के पात्रों का ित्रण पाठकों को आकर्षित करता है। वह अपने पात्रों के द्वारा समकालीन समा ा की समस्याओं को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। 'दा यु' कहानी में मदन पात्र के द्वारा वर्ग संघर्ष को देखा ा सकता है। शेखर ोशी के इस पात्र के ारित्र ित्रण में हम यह देख सकते हैं। " ागदीश बाबू का मुँह क्रोध के कारण तमतमा गया, शब्दों पर अधिकार नहीं रह सका। मदन 'प्रेस्टि ा' का अर्थ सम ा सकेगा या नहीं, यह भी उन्हें ध्यान नहीं रहा। पर मदन बिना सम ाए ही सब कुछ सम ा गया था।"[63] शेखर ोशी के इस ारित्र-ित्रण के द्वारा निम्न वर्ग के मदन और मध्यवर्गीय ागदीश बाबू के बी ा के वर्ग संघर्ष को देखा ा सकता है।

'कविप्रिया' कहानी में 'शीला' पात्र के ारित्र-ित्रण के द्वारा गिरीश के प्रति उसका प्रेम स्पष्ट होता है। और इसी कहानी में गिरीश पात्र के ारित्र-ित्रण के द्वारा उसका आदर्श स्पष्ट होता है। कहानी में उसका ित्रण इस प्रकार है-"मैं सिफारिश के बल पर किसी और के पेट पर लात नहीं मार सकता।"[64] 'टूटन'कहानी में 'त्रिलो ान' के ारित्र-ित्रण के द्वारा और 'व्यतीत' कहीन में

---

[63] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.12

[64] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.155

बाबू पात्र के ारित्र-ित्रण के द्वारा अपेन परिवेश से कट ाने के दुख को प्रस्तुत किया गया है।

टूटते परिवार का दुख बु ुर्गों पर पड़ता है। यह हम 'परिक्रमा' कहानी में 'हरिदत्त' के ित्रण द्वारा देख सकते हैं। हरिदत्त बंटवारे के विरुद्ध अपना मत इस प्रकार प्रकट करता है "रामी! िस दिन मैं मर ाऊँगा, उस दिन तुम पहले बँटवारा करना फिर मेरी अर्थी उठाना। पर ाब तक मैं िंदा हूँ, कभी ऐसी बात इस घर में नहीं उठेगी। क्रोध और दुख के कारण उसका शरीर काँपने लगा था और आँखें भर आयी थीं।"[65]

'कोसी का घटवार' शीर्षक कहानी में गुसाँई का ारित्र-ित्रण इस प्रकार है-"कभी-कभी गुँसाई को यह अकेलापन काटने लगता है। सूखी नदी के किनारे का यह अकेलापन नहीं, िंदगी भर साथ देने के लिए ाो-अकेलापन उसके द्वार पर धरना देकर बैठ गया है, वही। िसे अपना कह सके, ऐसी किसी प्राणी का स्वर उसके लिए नहीं। पालतू कुत्ते-बिल्ली का स्वर भी नहीं। क्या ठिकाना ऐसे मालिक का, िसका घर-द्वार नहीं, खाने-पीने का ठिकाना नहीं।"[66] गुसाँई पात्र के इस ारित्र-ित्रण से उसके ीवन में व्याप्त अकेलापन स्पष्ट हो रहा है।

<u>कथोपकथन</u>

यह शिल्प स्वरूप का तीसरा तत्व है। इस तत्व से ारित्र-ित्रण उद्घाटित होता है। कथोपकथन ितना संक्षिप्त, मार्मिक, सरस एवं मन भावक होगा उतनी ही कथावस्तु भी आकर्षित करनेवाली एवं परिमाि ति होगी। र ानाकार संवादों के माध्यम से कथावस्तु का विकास, पात्रों की ाारित्रिक व्याख्या, देशकाल, वातारण का ज्ञान तथा अपना उद्देश्य पूरा करता है। संवाद के अनेक भेद हैं। र ानाकार अपनी कहानियों में इन सारे भेदों का प्रयोग करता

---

[65] मेरा पहाड़, शेखर ाोशी-पृ.143

[66] मेरा पहाड़, शेखर ाोशी-पृ.61

है। ैसे भावात्मक, नाटकीय, व्यंग्यात्मक, दार्शनिक आदि। इन सभी भेदों का आयो ान पात्रों के ारित्रांकन को प्रभावशाली बनाने के लिए किया ाता है। कथोपकथन कहानी शिल्प का वह उपकरण है िससे कथावस्तु परिष्कृत, स ाीव, सटीक एवं अभिनव बनती है। कहानियों में संवाद संक्षिप्त, उपयुक्त, अनुकूल एवं मार्मिक होने पर भी पाठक रसानुभूति का अनुभव करता है।

शेखर ोशी की कहानियों का संवाद संक्षिप्त, सरल एवं स ाीव है। 'किं करोमि ानार्दन' शीर्षक कहानी में नित्यान यु की धार्मिक भावना पर व्यंग्य करते हुए उनकी बड़ी बहु कहती है। "हाँ, बड़े धर्मात्मा हैं। सर्दियों में एक दिन भी नहाया नहीं, बण्डी पहने ही ौके में भात खाने बैठ ाते थे, आ ा एक छोटी-सी बात के लिए उसका धरम बिगड़ ाएगा।"[67] इसके उत्तर में नित्यान यु की पत्नी कहती है-"बु ापा आएगा, तो ानोगी बिटिया। अभी तो हाथ-पैर ालते हैं न! इसीलिए बंदर की तरह उछल-कूद म ा रही है।"[68] यहाँ एक व्यंग्यात्मकता का प्रयोग करती है तो दूसरी दार्शिक संवाद का प्रयोग करती हैं।

उनके संवाद उपयुक्त, अनुकूल और कथावस्तु को आगे ब ाते हैं। 'स्वप्न देश की एक उदास शाम' कहानी में दोनों पहाड़ी मित्र ाब बहुत दिनों के बाद मिलते हैं, उनके संवाद इस प्रकार हैं-"देबदा, अपने साथ के लड़कों में से कोई दिखाई नहीं दिया। मथुरिया, ितुव, बहादुर, भूपाल... कितने ही थे।"

"हाँ, मोहन बाबु, सब ाले गये। कोई कहीं, कोई कहीं, ाहाँ िसके सींग समाये।"

र ानाकार-"उदास स्वर में देबिया ने उत्तर दिया।"[69]

---

[67] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.11
[68] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.11
[69] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.160

यहाँ शिक्षित वर्ग के द्वारा एक प्रकार की भाषा का प्रयोग हुआ है तो अनप ़ पहाड़ी मित्र के द्वारा पहाड़ी भाषा का प्रयोग किया गया है। पात्रों के सामा ाक द र्ा के अनुसार संवादों का प्रयोग करके र ानाकार को सफल बनाया है।

कहानी के शिक्षित पात्रों के संवादों में अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग हुआ ैसे 'प्रतीक्षित' कहानी में डॉक्टर के द्वारा।

डॉक्टर-"साधारण केस है। लेकिन आपकी घबराहट की क्या दवा है। इनएक्सपीरिएन्सड पीपुल।"

र ानाकार-"हमारी अनुभवहीनता पर बुड् े डॉक्टर का सहानुभूति-प्रदर्शन स्वाभाविक था।"

"थोड़ी देर बाद, मैटरनिटी वार्ड से सहसा नव ाात शिशु ने केहाँ... केहाँ के स्वर में अपने आगमन की सू ाना दे दी।

<u>वातावरण</u>

यह भी शिल्प स्वरूप का तत्व है। यह तत्व कहानी में सह ाता और सरलता लाने में सहायक होता है। वातावरण के ाित्रण द्वारा कहानी किस परिवेश में ाल रही हैं पता ालता है। शेखर ोशी पहाड़ी केंद्रित कहानियाँ लिखी हैं। इन कहानियों में वातावरण का ाित्रण स ाीव है।

'छोटे शहर के बड़े लोग' शीर्षक कहानी में पहाड़ी इलाका गर्मियों में किस प्रकार रहता है इस का ाित्रण किया गया है। "गर्मियों के मौसम की बात भिन्न है ाब पूरा कस्बा सैलानियों की रंगीनी से खिल उठता है और वे लोग सुबह से लेकर देर रात तक बा ाार, सड़कों व होटलों के छ ाों पर ाहकते-फुदकते रहते हैं। तरह-तरह की कारों, वैनों और गाड़ियों की ाि ल्लपों से कस्बा गूँ ाता रहा है। सैलानियों की पोशाक, उनका केश-विन्यास, उनकी

ाल- ाल लोगों की उत्सुकता और ा ार्ा का विषय बनी रहती है।"[70] शेखर ोशी के इस वातावरण के ित्रण द्वारा पहाड़ों का सामाि ाक ीवन स्पष्ट हो रहा है।

'टूटन' कहानी में गाँव का वातावरण इस प्रकार ित्रित हैं "दांयी ओर देवी का मंदिर। त्रिलो ान के हाथ अन ाने ही श्रद्धा से ुड़ गये। उधर पेड़ों की ओट में ारना या ाहाँ वे अपने हम ोलियों के साथ ब ापन में घंटों नंग-धड़ंग नहाया करते और पानी की गूल में पत्तों की नाव बहाकर दुपहर बिता देते थे। वह गौ ार था, आ ा भी गाय- ोरों को छोड़कर ब ो वहाँ गुल्ली डंडा खेल रहे होंगे। वह पुराने स्कूल का खंडहर था-प्रेम वल्लभ मास्साब ने हाथ की छड़ी से न ाने कितनी बार उनकी हथेलियाँ लाल की थीं। वह सिमरवाला खेत हर साल रोपाई के दिन वहाँ हुड़के की थाप पर रोपाई होती थी।"[71] शेखर ोशी के इस ित्रण के द्वारा त्रिलो ान का गाँव के प्रति प्रेम व्यक्त हो रहा है।

'आदमी का डर' शीर्षक कहानी में ंगल का ित्रण हुआ है। "सुबह से ही आसमान हिमानी बादलों से गहराया हुआ था। देवदारु का वन सामान्यतः वैसे भी छायादार वृक्षों के कारण अंधकारपूर्ण लगता है और दिन तो बादलों के कारण और भी डरावना प्रतीत हो रहा था।"[72] इस प्रकार के ित्रण के द्वारा ब ों के डर पर ोर देते हैं। कहानी में यह ित्रण ब ो के डर को बताने में सहायक होता है।

औद्योगिक परिवेश की कहानियों में वातावरण का ित्रण उस परिवेश को पुष्ठ करता है। ैसे-"कुछ कारीगर अपनी ागह से उठकर धीरे-धीरे मैदान की ओर ाले आ रहे थे। कुछ लोग अब तक आकर दीवार के ऊपर बैठ ुके

---

[70] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.32
[71] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.93
[72] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.114

थे और शेष अपनी मशीनों के पास खड़े हुए हाथ पोंछ रहे थे। वे सब एक ही तरह के मटमैले, ीले- ाले ओवर हॉल में लिपटे हुए थे।"[73] इस ित्रण के द्वारा कहानी का औद्योगिक परिवेश स्पष्ट हो रहा है। शेखर ोशी की कहानियों के कथ्य के आधार पर वातावरण का ित्रण किया है।

भाषा

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम ही नहीं बल्कि शिल्प का प्राण तत्व भी है। लेखक परिवेश को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग करता है। र ानाकार की सफलता उसकी भाषा पर निर्भर रहती है। भाषा ितनी सरल, भावव्यं ाक एवं बोधगम्य होगी उतनी ही र ाना प्रौ ., सशक्त एवं प्रभावशाली होगी। कहानी की भाषा के संबंध में डॉ.शोभा बिसारिया कहती हैं कि-"कहानी एक लघु साहित्यिक विधा है इसीलिए इसकी भाषा सरल, सह ा होनी ाहिए। दुरूह भाषा कहानी की प्रभावशीलता को कम कर देती है तथा कहानी नीरस लगने लगती है।"[74] शब्दों के कुशल संयो ान एवं सम्मिश्रण से भाषा समर्थ एवं शक्तिशाली ही नहीं बनती, बल्कि स ीव एवं साकार भी हो ाती है। भाषा वह माध्यम है िससे वि ारों को अभिव्यक्त किया ाता है तथा इसीसे कथा-वस्तु की आत्मा स ाग एवं ागृत होती है।

शेखर ोशी की कहानियों की भाषा सह ा और सरल है। उन्होंने पात्रानुकूल लोक भाषा का प्रयोग किया है। अत्यन्त सह ा और ठंडी भाषा के माध्यम से ये कहानियाँ हमारे समक्ष िस यथार्थ का उद्घाटन करती हैं, उसके पीछे समकालीन ान- ीवन की बहुविधि विडंबनाओं को महसूस किया ा सकता है। सपनों की वास्तविकता से अपरि ित ब ों की खुशी हो या

---

[73] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.36

[74] डॉ.शोभा विसारिया, कहानीकार प्रसाद-पृ.65

बिरादरी की दलदल में फँसे व्यक्ति की मनोदशा-लेखकीय दृष्टि उन्हें एक अर्थ-गंभीर्य से भर देती है। उसके पास आदर्शवादी निर्णय है तो उसके सामने खड़ा कठोर और भयावह यथार्थ भी है। शेखर ोशी की कहानियों की अपनी एक अलग भाषा रही है, ो 'मेरा पहाड़' की कहानियों में भी पूरे रंग-ओ-अब के साथ मौ ूद है।

"शेखर ोशी ने 'अपने पहाड़' को बिना किसी संवेगात्मक तरफदारी के ि ास यथातथ्य भाषा में प्रस्तुत किया है, वह संवेदना को एक समृद्ध ज्ञान की कोटि में ले ाता है ओर संवेदना से अ ित इस ज्ञान को पुनः र ानात्मक और यथार्थपरक संवेदना में बदल देता है। यह प्रक्रिया पहाड़ को एक ऐसी काया देती है ि ाससे वं ित पहाड़ ऐंद्रिक बिंब तो हो सकता है, लेकिन वास्तविक पहाड़ नहीं हो सकता।"[75]

ाब वे पहाड़ के सौदंर्य की ा ार्ा करते हैं तो लगता है पहाड़ के एक साथ कई बिंब दृश्यमान हो उठे हैं-"दिन का तीसरा पहर ालान पर था, ीड के पेड़ों की लंबी परछाइयाँ अ ागर की तरह सड़क के आर-पार पसर गयी थीं।"[76] शेखर ोशी की पहाड़ केंद्रित कहानियों में पहाड़ के इस सौंदर्य में ामीन से कटने का कहीं अहसास भी है-"गाँव के सीमांत पर बहती वेगहीन नदी का रेंगता ाल"[77] तो कहीं ीवन के एकाकीपन का त्रासद ो 'किट्-किट्' की आवाज़ के साथ एक दिशा पा रही है-"काठ की ि ाड़िया किट्-किट् बोल रही थी और उसी गति के साथ गुसाई को अपने हृदय की धड़कन का आभास हो रहा था।"[78]

---

[75] मेरा पहाड़, शेखर ोशी
[76] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.115
[77] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.148
[78] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.67

'गोपुली बुबु' कहानी में शेखर ोशी संवादात्मक शैली का प्रयोग करते हैं। "आ भाऊ! बैठ ाा! तूमाया-मोह-वाला हुआ, आकर भेंट कर गया, हमें भी संतोष हो गया, तू ठीक है? ब ो कुशल से हैं? ीते रहे, बड़ी उमर पायें।"[79]

शेखर ोशी की कहानियों में अक्सर पहला वाक्य बड़ा अर्थवान होता है। लेकिन उसकी अर्थवत्ता का पता कहानी के अंत में ालता है। 'कोसी का घटवार' में पहला वाक्य है-"गुसाई का मन िलम में नहीं लगा।" पन ाक्की के घटवार की उदासी का संकेत है यहाँ और वही कथा का केंद्र बिंदु भी है। 'ब ो का सपना' में पहला वाक्य है-"मैं उसके ोहरे पर सुखद आश ार्य की ामक देखना ाहता था।" यह बी ा वाक्य है। उपहार देकर गरीब बाप अपने ब ो के सपने को पूरा कर उसे ाकित करना ाहता है। क्या हुआ यह? नहीं, उपहार तो रास्ते में खो गया। ैसे देश का सपना आज़ादी के बाद खो गया। कहानी उसी खोए सपने की है।

शेखर ोशी यथार्थ और पाठक के बी ा एक गैप छोड़ते हैं। उनकी कहानियों में एक अंतराल रहता है िासमें आदर्श और यथार्थ दोनों की गुं ाइश रहती है। "वह कहानियों में टिप्पणियाँ करेन से ब ाते हैं। शब्दों के मामले में मितव्ययी हैं। इसलिए यथार्थ और पाठक के बी ा के अंतराल के कारण उनके यहाँ 'बोला' ितना महत्वपूर्ण है, उतना ही अबोला भी। पहले वह पाठक को अपनी विश्वसनीयता की गिरफ्त में लेते हैं और फिर उसे निष्कर्ष पर पहुँ ाने के लिए छोड़ देते हैं।"[80] 'गलता लोहा' कहानी में पुरोहित खानदान का मोहन लोहर का काम अपनाने की बात को लेखक कहानी के अंत में इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं-"उसने धनराम की ओर अपनी कारीगरी की

[79] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.38
[80] आ ाकल, मा ि 1995-पृ.46

स्वीकृति पाने की मुद्रा में देखा। उसकी आँखों में एक स कि की ामक थी- ि ासमें न स्पर्धा थी ओर न ही किसी प्रकार की हार- ीत का भाव।"[81] इसीलिए उनके यहाँ 'बोला' ि ातना महत्वपूर्ण है, उतना ही अबोला भी।

2.2.1 शब्द प्रयोग

शेखर ोशी अपनी कहानियों में तत्सम, तद्भव, उपसर्ग, प्रत्यय, अरबी-फारसी, उर्दू शब्दों का प्रयोग करते हैं।

तत्सम शब्द-मातृविहीन, शीघ्र

तद्भव शब्द-निबटाया, ल छन, तिकोनी आदि

अरबी-फारसी, उर्दू शब्द-माफिक, फ ीहत, मदद, बरबाद, मुहल्ला, हु ूर आदि।

उपसर्ग-अभागिनी, असुविधा, विभाग

प्रत्यय-ब ापन

युग्म शब्द- ाट-पट, ठीक-ठाक, बंधी-बँधाई

एक समान दो शब्द-हाँफती-हाँफती, धीरे-धीरे, मोड़-मोड़, पीछे-पीछे, टहलते-टहलते, ारते- ारते आदि।

उन्होंने अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग अपनी कहानियों में किया है। ैसे- एक्सीडेण्ट, लाईफ, क्वार्टर, पायलट, पॉलिटिक्स, स्लीपिंग बैग, फोटोग्राफी, ड्रीमलैंड, होटल, पेपरमेंट, फोटो, ट्रेनिंग आदि। शेखर ोशी ने अपनी कहानियों में ध्वन्यात्मक शब्दों का काफी प्रयोग किया है। ैसे- ुँ ालाहट, बड़बड़ाहट, हड़बड़ाहट, किट-किट, खिस्सर-खिस्सर, छप्प-छप्प, छि छर-छि छर, ट्प-ट्प-टप आदि। इन सभी के साथ-साथ उन्होंने पहाड़ी केंद्रित कहानियों में पहाड़ी भाषा के शब्दों का सफल प्रयोग किया है। ैसे माँ के लिए

[81] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.80

ई ा, भुलि (छोटी बहन), दा यु (बड़ा भाई), मुकर्रर (मुकद्दमे), डाँड़ो (पर्वतों), नौल (बावडी) आदि। उन्होंने अपनी कहानियों में कई ागह गालियों का भी प्रयोग किया है। ैसे-'स्साला', 'ससुरे', साले-कमीने हैं, आवारा- "मर! अब ले क्यों नहीं लेता", (कोसी का घटवार), "साला यह घोड़ा भी डर गया" (समर्पण), "प ने लिखने के नाम पर तो इसे मौत आती है। कल को फेल होगा, तो इसके बाप यही तो कहेंगे कि मेरे बेटे से घर का काम कराते रहे होंगे, पास कैसे होता?" (ाद्दी)

इन शब्दों के अतिरिक्त शेखर ोशी की भाषा में संस्कृत भाषा का भी प्रयोग हुआ है। उदाहरणार्थ-सुस्कृत भाषा का एक प्रयोग द्रष्टव्य है-"एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः"[82] यह संस्कृत भाष का प्रयोग 'कथा व्यथा' कहीन में पडित ाी के द्वारा किया गया है। इसी कहानी में एक और उदाहरण- "इति श्री स्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायण कथायाः प्रथमोध्याय.." और "ॐ ाय लक्ष्मीरमणा, स्वामी ाय लक्ष्मीरमणा..." "किं करोमि ानार्दन" कहानी में संस्कृत भाषा का प्रयोग नित्यान यु के द्वारा किया गया है। "धलम छेत्ते कुलु छेते थमवेता ाुाुत्यवः..." 'सिनोरियो' कहानी में "अस्तुतरस्यांदिश देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिरा ाः..." आदि।

2.2.1.1 मुहावरे एवं कहावतों का प्रयोग

शेखर ोशी की कहानियों में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग अनेक स्थानों पर हुआ है। ाहाँ भी इनका प्रयोग हुआ वहाँ भाषा के सौंदर्य में द्विगुणित वृद्धि हुई है। शेखर ोशी की कहानियों में आये कुछ मुहावरे देखिए-"मिट्टी के साथ िंदगी मिट्टी हो गयी" (हलवाहा), "आँखों की ओट हो ाएँगे", " ोहरा

[82] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.105

तमतमा गया था" " ोर-डाँगरों के होंठ आकाश को लगे हैं" आदि। इनके अतिरिक्त गला भर आना, क ोटते रहना आदि मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है।

शेखर ोशी की कहानियों में कहावतों का भी प्रयोग हुआ है। ैसे 'समर्पण' कहानी में "कैलखूर के प्रेत की बात" उस अं ाल की कहावत बन गयी है। यह कहावत उस अं ाल के लोगों में प्र ालित है।

2.2.1.2 ित्रात्मक भाषा

शेखर ोशी ने ित्रात्मक भाषा का प्रयोग किया है। कहानीकार ाब किसी प्राकृतिक दृश्य अथवा वातावरण का ित्रण करता है तब उसकी भाषा ित्रमय हो ाती है। इस संबंध में 'सिनारियो' शीर्षक कहानी का एक ित्रमय उदाहरण द्रष्टव्य है। "आसमान साफ था। अस्त होते हुए सूर्य का आलोक का आलोक किन्हीं अदृश्य दिशाओं से आकर उस संपूर्ण हिम-विस्तार को सिंदूरी आभा से भर गया था। धीरे-धीरे वह सिंदूरी आभा बैंगनी रंग में परिवर्तित होने लगी और पर्वत श्रृंखला की सलवटें गहरी श्यामल रेखाओं में अपनी पह ान बनाने लगी थी।"[83]

2.2.1.3 विषयानुकूल एवं पात्रानुकूल भाषा

शेखर ोशी की कहानियों की भाषा विषय एवं पात्रों के अनुकूल है। 'किं करोमि ानार्दन' नामक कहानी में नित्यान यु एक धार्मिक व्यक्ति है। इसीलिए उनकी भाषा में धार्मिकता स्पष्ट गो ार होती है "हे कृष्ण! इस कुरुक्षेत्र में मु ो कुछ नहीं सू ाता। मुरारी! कोई राह बताओ! "स्वप्न देश की एक उदस शाम" नामक कहानी में दो पहाड़ी मित्र ि नमें से एक शिक्षित है उसकी भाषा अंग्रेज़ी शब्द मिश्रित है-"सौभाग्य तो हमारा सबसे बड़ा है दुकानदार ी। आप लोगों का दर्शन हुआ, आपके देश का दर्शन हुआ-एकदम ड्रीमलैंड-स्वप्न देश का

[83] शेखर ोशी-पृ.67

माफिक है। मैं तो इतना सौंदर्य देखकर पागल हो ाऊँगा। और ो अशिक्षित उसकी भाषा में पहाड़ी भाषा देखी ा सकती है-"हाँ, हवा-आँधी ल रही है, बी ा ंगलात का मामला ठहरा। कोई ि ार-ि ानगारी इधर-उधर उड़ गयी तो फ ाीहत होगी।" 'व्यतीत' कहानी में तीन साल की उम्र की भाषा का प्रयोग हुआ है। मुन्ना दद्दा इक्कूल। आशु रेल के लिए छुक्-छुक, मोटर के लिए घुर्र-घुर्र शब्दों का प्रयोग करती है। 'गोपुली बुबु' कहीन में पहाड़ियों की लोक भाषा ो खि ाड़ी है उसे देखा ा सकता है। "मेरी कथा ही कथा हुई ब ू। क्या कहूँ, क्या न कहूँ। कह के भी क्या होगा? तू प ़ा-गुणा लड़का हुआ, तूने दुनियाँ देखी है। हम इसी गुफा में पैदा हुए, यहीं मर-खप ाएँगे। हमारी कथा तो इन्हीं डाँडों-टीलों ने देखी, इन्हीं डाँडों-टीलों ने सुनी।" शहर के प ़े-लिखे पात्रों द्वारा अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग हुआ है। ैसे 'मृत्यु' कहानी में प्रो.मायुर ने वाइंट सेमिनार में कहा है-"लाइफ को रू ़ अर्थ की परिधि में हम नहीं बाँध सकते। अगर मैं कहूँ मिस पाण्डेय इ ा फुल आफ लाइफ।" 'प्रतीक्षित' कहानी में डॉक्टर अंग्रेज़ी शब्द 'इनएक्सपीरिएन्सड पीपुल' शब्द का प्रयोग करता है। अतः हम कह सकते हैं कि शेखर ोशी की भाषा विषयानुकूल एवं पात्रानुकूल है।

2.2.1.4 प्रतीकात्मक भाषा

कहीं-कहीं शेखर ोशी की कहानियों की भाषा प्रतीकात्मक बन गयी है। स्वातंत्रयोत्तर युगीन कहानी की भाषा में यह गुण अपेक्षाकृत अधिक पाया ाता है। नई कहानी के लेखकों की भाषा में भी यह दिखाई देता है। 'गलता लोहा' कहानी में उनकी यह विशेषता द्रष्टव्य है-"उसने धनराम की ओर अपीन

कारीगरी की स्वीकृति पाने की मुद्रा में देखा। उसकी आँखों में एक स कि की ामक थी-ि ासमें न स्पर्धा थी और न ही किसी प्रकार की हार- ीत का भाव।"[84]

'दा यु' कहानी में " ागदीश बाबु ने आँखें उठकार मदन की ओर देखा, उन्हें लगा ैसे अभी वह वालामुखी-सा फट पड़ेगा।" मदन अधिक दुख के कारण क्रोधित होने की बात को स्पष्ट करने के लिए " वालामुखी-सा फट पड़ेगा" शब्द का प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार 'रास्ता' कहानी में "ना-ना भइया। कैसा धाम कैसी छाया। ाब अपने पाँव ही काटकर दूसरों को सौंप दिये तो फिर कमी-बैसी कैसी?" उन्होंने दूसरों की बात पर ाले आने के विषय को सू ित करने के लिए यहाँ "पाँव ही काटकर सौंप दिया" ैसे प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है। 'कोसी का घटवार' कहानी में समय बहुत हुआ इसे सू ित करने के लिए प्रतीकात्मक भाषा में "सूर ा कहाँ का कहाँ ाला गया है" का प्रयोग किया गया है।

2.2.1.5 व्यंग्यात्मक भाषा

शेखर ोशी अपनी कहानियों में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग करते हैं। 'आशीर्व ान' कहानी में ाब श्यामलाल अपनी सेवा-निवृत्ति के अवसर पर आयोि ात विदाई समारोह में ाब वह अपनी अनुभूतियों पर भाषण देना शुरू किया तब उस पर व्यंग्य करते हुए "अब भई रामायण शुरू"[85] इस प्रकार व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। इसी प्रकार 'किं करोमि ानार्दन' नामक कहानी में "हैं रे मोहनियाँ, बरात में पूडी उडाने तू नहीं गया?"[86] व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। इसी कहानी में और एक स्थान पर व्यंग्यात्मक भाषा का उदाहरण द्रष्टव्य है-"बकरी की िंता तु ो क्या पड़ी है, बरात देखने ाा।

[84] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.80
[85] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.115
[86] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.40

बकरी शाम तक घर ाली ही ाएगी।"[87] इस प्रकार की व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग नित्यान यु के द्वारा किया ाता है ाब एक लड़का बकरी का कारण दिखा कर सेव फलों को ोरी करने आता है।

2.2.1.6 भावात्मक भाषा

शेखर ोशी अपनी कहानियों में भावात्मक भाषा का प्रयोग भी करते हैं। उनकी कहानियों में करुणा से पूर्ण भाव अनेक स्थानों पर आये हैं। ऐसे ही करुणा ानक प्रसंगों में उनकी भावात्मकता द्रष्टव्य है-"मदन को ागदीश बाबू के व्यवहार से गहरी ोट लगी। मैने ार से सिरदर्द का बहाना कर वह घुटनों में सर दे कोठरी में सिसकियाँ भर-भर रोता रहा। घर-गाँव से दूर, ऐसी परिस्थिति में मदन का ागदीश बाबू के प्रति आत्मीयता-प्रदर्शन स्वाभाविक ही था। इसी कारण आ ा प्रवासी ीवन में पहली बार उसे लगा ैसे किसी ने उसे ई ा की गोद से, बाबा की बाँहों से और दीदी के आँ ाल की छाया से बलपूर्वक खीं ा लिया हो।"[88]

2.2.2 शैली

'शैली' शब्द अंग्रेज़ी के 'स्टाईल' शब्द का हिंदी रूपांतरण है। इसका शाब्दिक अर्थ अभिव्यक्ति का ंग या तरीका है। आ ा 'शैली' शब्द भाषा के र ाना तक ही सीमित न हरकर कवि और लेखकों की उस संपूर्ण र ाना-पद्धति और र ाना-साधनों तक विस्तृत हो गया ि ासे कृति के बाह्य अवयवों अथवा रूप पक्ष का निर्माण होता है। आ ार्य नंददुलारे वा ापेयी ने शैली के प्रयोग के बारे में लिखा है कि-"आ ा शैली शब्द का प्रयोग कला और शिल्प के समस्त उपकरणों की अभिव्यक्ति के लिए किया ाता है, यद्यपि मूलतः स्टाइल या

[87] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.41
[88] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.12

शैली कवि या लेखक की शाब्दिक अभिव्यं ाना के विवे ान का ही आशय रखता रहा है।"[89]

कहानीकार विभिन्न शैलियों के माध्यम से अपने वि ाारों की अभिव्यक्ति करता है। शैली के अभाव में कहानी संगठित एवं परिपक्व होने में असमर्थ रहती है। कहानीकार की विशिष्ट अभिव्यक्ति में आलंकरिकता, प्रतीकात्मकता, रो ाकता, भावात्मकता तथा व्यंग्यात्मकता आदि विशेषताओं के होने से ही कहानी सशक्त एवं प्रौ. ा होती है। किसी भी कथावस्तु को सरल एवं सफल बनाने के लिए सरल एवं उपयुक्त शैली की आवश्यकता होती है और यह तभी संभव है ाब कथाकार सभी शैलियों का प्रयोग करने में कुशल हो। शेखर ाोशी ने अपने कहानी लेखन में निम्नलिखित शैलियों का प्रयोग किया है।

2.2.2.1 वर्णनात्मक शैली

शेखर ाोशी ने अपनी कहानियों में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। यह शैली सबसे सरल एवं प्रा ाीन है। इसमें वि ाारों एवं घटनाओं का विशद वर्णन होता है। उनकी इस शैली का एक अनुपम उदाहरण देखिए-"गाड़ी ाटके देकर आगे ब.ी, तो शाम घिर आयी थी। छोटे स्टेशन पर इक्का-दुक्का यात्रियों के ा.ने-उतरने की ाहल-पहल, स्टेशन की बत्तियों और दो- ाार खोम ो वालों के शोरगुल को पार करती हुई गाड़ी आगे निकली, तो डिब्बे में फिर वही एकरसता फैल गयी। दो- ाार बु ाुर्ग खेत-खलिहान और अना ा-गल्ले की हालत पर ि ंता प्रकट करने लगे। एक विद्यार्थी ने अपने थैले से कोई पत्रिका निकाल ली थी, कहीं किसी कोने से बी ा-बी ा में एक नन्हे-मुन्ने का रोने

[89] रीति और शैली, आ ाार्य नंददुलारे वा ापेयी-पृ.163

का स्वर उठ ाता था।"[90] इस प्रकार की वर्णनात्मक शैली का प्रयोग 'साथ के लोग' शीर्षक कहानी में भी हुआ है।

इसी प्रकार वर्णनात्मक शैली का एक और उदाहरण हम 'निर्णय' कहीन में देख सकते हैं-

"धीरे-धीरे लोगों की संख्या कम होती गयी और अंत में केवल एक बू े व्यक्ति को छोड़कर और सब लोग उठकर ाल दिये तो एकांत का लाभ उठाकर ैसे उस बु ुर्ग ने श्रीधर के निकट आकर बहुत आत्मीयता से फुसफुसाकर पूछ ही लिया-"बेटा, कोई घूसखोरी, गबन का मामला तो नहीं हुआ? घबराना नहीं। सब ठीक हो ाएगा। देवी रक्षा करेंगी।"[91]

'प्रथम साक्षात्कार' कहानी में भी वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है- " ाया ते ी से बालकनी की ओर लपकी। उसकी बे ैन दृष्टि गली में आते- ाते लोगों के बी ा प्रफुल्ल को खो ाने लगी। पर वह अब तक बहुत दूर निकल गया था। बाएँ कंधे पर कोट लटकाए, थका-हारा-सा प्रफुल्ल, सिर ुकाए अपने विगत छः मास के ीवन का लेखा- ोखा ले रहा होगा।"[92]

'कविप्रिया' कहानी में शीला और मौसी की स्थितियों का वर्णन वर्णनात्मक शैली के द्वारा इस तरह प्रस्तुत किया गया है-"मौसी ने ाते- ाते आवाज़ दी, शीला, ारा रसोईघर में आ ाओ, मैं मंदिर ा रही हूँ। हाथ का काम छोड़, ईंटों की क ी, छोटी दीवार को लाँघकर शीला मौसी की रसोई में आ बैठी। मौसी मंदिर से शीघ्र नहीं लौटेंगी। दसों देवताओं की पू ा, दसों की मनौती और दसों को उलाहना देना होगा। गाँव-पड़ोस की बू ी-बालियों से अपना दुख दर्द कहेंगी। स ी या ूठी सहानुभूति पाकर कुछ ी हलका हो

---

[90] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.19
[91] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.128
[92] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.124

ाएगा, तो एक बार फिर भरी-भरी आँखों से उन देवताओं से कितना कुछ कहकर लौटेंगी।"[93]

इस प्रकार शेखर ोशी घटनाओं और स्थितियों के वर्णन में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग करते हैं। ि ससे कहानी में सह ाता का उद्भव हुआ है। कहानी में इस शैली के प्रयोग के द्वारा घटनाएँ हमारे सामने स ीव हो उठती हैं।

2.2.2.2 आत्मकथात्मक शैली

शेखर ोशी की कहानियों का एक रूप यह भी है। इसमें कहानीकार प्रथम पुरुष में कथा का वर्णन करता है। इस शैली में केवल एक ही पात्र विशेष का ि त्रण रहता है। पात्र स्वयं अनुभव की हुई घटना का ि त्रण करता है। 'ब ो का सपना, निर्णायक, प्रतीक्षित, गाईड, रास्ते, सहयात्री' आदि कहानियों में इस शैली का प्रयोग हुआ है। 'निर्णायक' कहानी में आत्मकथात्मक शैली का एक उदाहरण देखिए-"मु ो उसका अपने सम्मुख इस तरह उपस्थित होना करुणा ानक लग रहा था। यदि इसका हलका-सा भी आभास मु ो पहले हो गया होता तो शायद मैं अपेन आपको इस स्थिति से ब ा ले ाता। यूँ भी सामान्य स्थिति में मु ो उसके ीवन का निर्णायक बनने का कोई अधिकार नहीं था। पर यह उसके बॉस की व्यक्तिगत सनक थी। वह मेरे ही स्तर का कर्म ारी था और उसका बॉस अधिक दिन नहीं हुए मेरा भी बॉस रह ुका था। हम दोनों में अंतर केवल इतना था कि अपने व्यवहार से मैं बॉस का विश्वासपात्र बन गया था और उसने अपनी आदतों के कारण यह स्थिति पैदा कर दी थी कि अब मैं उसके भविष्य के निर्णय में सहायक बनकर बैठा हुआ था।"[94]

---

[93] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.78
[94] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.64

इसी शैली का एक और उदाहरण 'गाईड' कहानी में देखिए-"मेरी पत्नी आश्वस्त थी कि उस लंबी यात्रा में वे मेरे सहभागी बनने को सहमत हो गए थे। मैं अपाहि ा या बीमार हूँ, ऐसी बात नहीं। अकेले भी मैंने अनेकों बार लंबी-लंबी यात्राएँ की हैं और सकुशल अपने प्रस्थान बिंदु पर लौट आया हूँ। लेकिन मेरा अनुमान है, मेरी पत्नी हर बार मेरे प्रवासकाल में ि ातने भी दुःखद संयोग हो सकते हैं, उन्हें मेरे साथ ोड़कर व्यर्थ ही ि ांतित होती रहती होगी। तैयारी से लेकर विदा लेने तक मु ो बीसियों प्रकार के आदेश देना वे नहीं भूलती।"[95]

'ब ो का सपना' नामक कहानी में यही शैली पाई ाती है। "शाम को स्टेशन से साइकिल के अड्डे तक और वहाँ से फिर घर तक मैं अपनी कुछ दूसरी ही मानसिक उल ानों में खोया-खोया-सा ालता रहा। ऐन घर के पास पहुँ ाकर ाब वह मु ो अपनी स्कूल की पोशाक में पीठ पर बो ाीला बस्ता लटकाए दिखाई दी तो मु ो एकाएक ोले का खयाल आया था और मैं लगभग घबरा गया। महीने के प्रारंभ में ही यह भारी ोट लग गई थी। मेरा घबराना स्वाभाविक था। मु ो देखकर वह निकट आ गयी थी। मैं साइकिल से उतरकर उसके साथ-साथ घर की ओर ालता रहा। शायद उसे मेरी उदासीनता खल गई थी। इस कारण उनसे हमेशा की तरह साइकिल पर बैठने की ि ाद नहीं की।[96]

2.2.2.3 संवादात्मक शैली

इस शैली में लिखी गयी कहानियों में संवाद एवं वार्तालाप रहता है। इसके द्वारा पात्रों का सफल ारित्र ि ात्रण होता है। शेखर ोशी ने अपनी

---

[95] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.59

[96] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.9

कहानियों में इस शैली का भी प्रयोग किया है। 'निर्णय' कहानी में इस शैली का प्रयोग देख सकते हैं।

"मैं सो ाता हूँ इसे हमदर्दी की ाूरत है, ालो यह भी करके देख लेते हैं। वह सुधार पर है-बहुत फर्क है अब।"

"वाकई! आपने बहुत साइकोलोि ाकल ंग से इसे देखा है- ारूर असर होगा।"

"इस आखिरी कालम के बारे में तुम्हारी क्या राय है?"

उन्होंने पूछा, "क्या तुम सम ाते हो वह स ामु ा-प्रमोशन डि ार्व करता है?"

"क्यों नहीं? ाब आपके व्यवहार से खराब रिपोर्ट पर आया हुआ आदमी औसत से अ छा हो सकता है तो उसके प्रमोशन के योग्य होने में क्या संदेह है?"[97]

'उस्ताद' नामक कहानी में भी संवादात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। यहाँ पात्रों के संवादों के द्वारा कहानी का रहस्य को खुल कर सामने आता है।

"कभी वालटैमिंग बाँधा है?" फकीरा ने बात स्पष्ट कर दी।

"नहीं।" मु ो स्वीकार करना पड़ा।"

"कभी देखा भी नहीं बाँधते हुए?" यह गिरधर की आवाज़ थी। सुनकर ऐसा लगा कि कहीं इन शब्दों में व्यंग्य छुपा हुआ है।"

"नहीं, लि ात-सा होकर फिर स्वीकार करना पड़ा।"

"कोई देखने दे, तब तो! वालटैमिंग बांधते वक्त ही तो बाबू को ााय पीने या किसी गाड़ी का रेडेटर साफ करने ाना पड़ता है। गिरधर ने ही फिर कहा।"[98]

---

[97] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.65

[98] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.19

यहाँ इन संवादों के द्वारा उस्ताद वालटैमिंग बाँधने का काम न सिखाने की बात स्पष्ट हो रही है ो इस कहानी का मुख्य विषय है। यहाँ संवादात्मक शैली के द्वारा र ानाकार इस रहस्य को पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं।

2.2.2.4 स्मृतिपरक शैली

शेखर ोशी ने अपनी कहानियों में अधिकतर इसी शैली का प्रयोग किया है। इस शैली में पात्र उन घटनओां को व्यक्त करते हैं ो पहले घट ुकी हैं। इस प्रकार की शैली के प्रयोग द्वारा लेखक अपनी कहानियों में एक प्रकार का कुतुहल एवं रहस्यात्मकता लाना ाहता है। िसके द्वारा पाठकों में उस कृति के प्रति आकर्षण ब .ाना ाहता है। इस शैली का सफल प्रयोग पर ही उस कृति की सफलता निर्भर करती है। इस प्रकार की शैली में लिखी शेखर ोशी की कहानियाँ कलात्मक एवं रो ाक हैं। प्रथम साक्षात्कार, रिक्त, ब ो का सपना, कविप्रिया, निर्णायक, शुभो दीदी, नेक्लेस आदि कहानियाँ इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

'प्रथम साक्षात्कार' कहानी का आरंभ इन वाक्यों से होता है-" ाया तेज़ी से बालकनी की ओर लपकी। उसकी बे ैन दृष्टि गली में आते- ाते लोगों के बी ा प्रफुल्ल को खो ाने लगी।"[99] ाया की इस स्थिति के मूल में उसके यौवनावस्था का प्रणय पत्र है। इस विषय को कहानी में ाया पात्र के माध्यम से स्मृतिपरक शैली के द्वारा आगे बताया गया है। वह उस घटित घटना को इस प्रकार व्यक्त करने लगती है-"वे कैशौर्य और यौवन की वयःसंधि के दिन थे। उस छोटे शहर में मुहल्ले, अड़ोस-पड़ोस में ो पारिवारिकता थी उसे लेकर कभी अपेन-पराए का भेद नहीं मालूम पड़ता था-कम-से-कम ब ापन में तो

[99] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.124

बिलकुल ही नहीं..." [100] अतः स्पष्ट है कि इस प्रकार की स्मृतिपरक शैली की कहानियों का आरंभ घटना या संवादों से होता है और उस घटना या संवादों के कारण आगे कहानी में बताया गया है।

इस कहानी में अगर स्मृतिपरक शैली प्रयोग के बिना कथा को यूँ ही साफ बताने से कहानी उतनी सफल नहीं होती थी। इस शैली के प्रयोग द्वारा लेखक पाठकों को आकर्षित करता है।

इसी शैली का प्रयोग 'मृत्यु' कहानी में भी हुआ है। कहानी का आरंभ इस वाक्य से होता है-"पिछले शनिवार की बातें याद कर अपने आप पर हँसी आने लगती है।"[101] इस वाक्य को प.ते ही पाठकों के मन में यह कौतुहल ागता है कि पिछले शनिवास क्या हुआ है? लेखक इस रहस्यात्मकता को अंत तक संभालते हुए अंत में स्मृतिपरक शैली के द्वारा उस रहस्य को मैं नामक पात्र के द्वारा उद्घाटित करते हैं-"शनिवार की उस शाम को बड़ी देर तक हम लोग बातें करते रहे बारी-बार से मृत्यु के उन क्षणों की हम लोग ा ार्ा करते रहे, िनके हम पृथक-पृथक रूप में साक्षी रहे थे। लेकिन हम में से किसी ने भी मृत्यु के उन क्षणों की ा ार्ा नहीं की, िनके हम तीनों संयुक्त रूप में साक्षी रहे थे।"[102]

उनकी कुछ कहानियाँ स्मृतिपरक शैली से ही आरंभ होती हैं। ैसे 'शुभो दीदी' शीर्षक कहानी। इस कहानी का आरंभ स्मृतिपरक शैली से संवादों के द्वारा होता है और उन संवादों के मूल कारण को कहानी में आगे बताया गया है। कहानी का आरंभ इन संवादों से होता है। "'उसे तो तीसरा ाल रहा है' माँ

---

[100] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.128
[101] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.46
[102] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.51

ने धीमे स्वर में कहा था। बात पिता ी को बतायी ा रही थी, पर माँ का मुँह उनकी ओर न था।

"किसकी बात कह रही हो?" पिता ी ने कालर का बटन लगाते हुए सहसा रुककर माँ से पूछा था।

"शुभा की ही कह रही हूँ, ी! अभी बे ारी की क ी उम्र है, खेलने-खाने के दिन।" माँ कह रही थी, और लगता था, ैसे अंदर-ही-अंदर किसी असहन वेदना से वह छटपटा रही हो।"[103]

कहानी प.ते हुए पाठकों को माँ की इस िंता का कारण पता नहीं ालता। इसके कारण पाठकों में आगे प.कर इस रहस्य को ानने की िज्ञासा होती है। ो आगे मैं नायक पात्र के स्मृतिपरक शैली के द्वारा बताया ाता है।

इस प्रकार शेखर ोशी ने इस आधुनिक शैली के प्रयोग के द्वारा अपनी कहानी कौशल्य को पाठकों के सम्मुख सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है।

2.2.2.5 मनोविश्लेषणात्मक शैली

यह आधुनिक साहित्य की सर्वाधिक प्र ालित एवं प्रसिद्ध शैली है। इसमें कहानीकार कहानी के पात्रों की मनःस्थिति का ित्रण करता है। शेखर ोशी अनेक कहानियों में इस शैली का प्रयोग करते हैं। 'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ' कहानी में 'वीरेंद्र' की मनःस्थिति का ित्रण प्रस्तुत शैली के माध्यम से देखिए-"मेरी ओर से अंतिम पार्टी शायद यूनिवर्सिटी कन्वोकेशन के दिन हुई थी। उसके बाद इस ब ाकाने खेल में मैं ाब भी गया, उन लोगों का अतिथि ही बनकर गया। फिर धीरे-धीरे ऐसे अवसरों पर मैं कोई बहाना बनाकर उनसे अलग हो ाता। शैल भी अब पहले की तरह आग्रह नहीं करती। वह ैसे मेरी कठिनाई को सम ा गई थी। कभी-कभी मामा के घर में उससे भेंट होने पर

[103] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.71

एक-दो औप ाारिक बातें होती। तब एकटक अपनी ओर उसे देखते हुए मु ो लगता कि ैसे वह और भी कुछ कहना ाहती हो। आ ा भी सो ाता हूँ, क्या स ामु ा शैल के अंतर्मन में कहीं कुछ था, ो अंत तक अनकहा ही रह गया हो।"[104]

'प्रतीक्षित' कहानी में इस शैली का प्रयोग हुआ है। ैसे-"अभी सिर से पैर तक सफेद वस्त्र में स ाी नर्स मुस्कराकर मु ो बधाई दे ाएगी। लड़का... या लड़की? लड़की हुई तो सृष्टि के इस विकास क्रम में तनिक भी हस्तक्षेप न होने पर भी लड़की की सू ाना देते हुए नर्स की प्रसन्न मुखाकृति पर असंतोष की एक हल्की-सी छाया तैर ायगी। कौन ाने नवगत शिशु लड़का ही हो और हार्दिक मुस्कान के साथ नर्स मु ो अपने संग लिवा ले ाय। परंतु भाभी के लिए किसी भी स्थिति में मातृत्व का गौरव कम नहीं होगा।"[105]

2.2.2.6 मिश्रित शैली

यह शैली समन्वयात्मक कही ा सकती है। इसमें कहानीकार एक ही कथावस्तु में विभिन्न शैलियों का प्रयोग करता है। शेखर ोशी की अनेक कहानियाँ ऐसी हैं ि ानमें अनेक शैलियों का प्रयोग हुआ है। 'निर्णायक' कहानी में आत्मकथात्मक, स्मृतिपरक, संवादात्क, मनोविश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक आदि शैलियाँ एक साथ देखी ा सकती हैं। इस शैली में घटना, पात्र सभी का महत्व रहता है।

2.2.3 शैलीगत विशेषताएँ

कहानी में सफल शैली के प्रयोग के लिए अनेक विशेषताओं का होना वाँछित है। व्यावहारिक दृष्टि से देखा ाये तो आकर्षक एवं कलात्मक शैली ही

---

[104] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.27
[105] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.130

कहानी या कृति को अधिक सरल एवं रो ाक बनाती है। पूर्व वर्णित शेखर ोशी की कहानियों की शैलियों में भावात्मकता, आलंकारिकता, प्रतीकात्मकता, प्रवाहात्मकता, व्यंग्यात्मकता, आं ालिकता एवं रो ाकता आदि विशेषताएँ दृष्टिगत होती हैं ि ानका विवे ान निम्नलिखित है-

2.2.3.1 भावात्मकता

शैली की इस विशेषता में कहानी का ारित्रांकन मूर्तिमय एवं स ाीव हो उठता है। शेखर ोशी की अनुभूतिपरक एवं करुणा प्रधान कहानियों में यह गुण बहुलता से पाया ाता है। इस संबंध में शेखर ोशी द्वारा लिखी गयी 'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ' कहानी का एक उदहारण द्रष्टव्य है-"इला ने कहा था, वीरेंद्र दादा, आ ा मत टालना, शैल फील करेगी। उसकी इंगे ामेंट की खुशी में पार्टी दी है। ... साथ की इस कुरसी पर शैल सिर ाुकाए बैठी है। इला, रश्मि, मीना खूब ाुहल कर रही है और मैं भी उनका साथ दे रहा हूँ... ैसे एकदम तटस्थ हो गया हूँ। कोई म ााक की बात शुरू करते-करते अ ाानक इला ाुप हो गई है। हम सभी इला की ओर और फिर ाहाँ ाकर इला की दृष्टि रुक गई है उस ओर देखते हैं। शैल की आँखों से टपटप आँसू गिर रहे हैं।"[106]

इसी प्रकार 'कविप्रिया' शीर्षक कहानी में भी इस शैली को देख सकते हैं- "भावावेग में शीला की आँखें भर आयीं। कमरे की निस्तब्धता को ीरती हुई मौसी के पैरों की आवाज़ निकटतर होती गयी। इससे पहले कि मौसी कुछ पूछती, शीला ने ही आँखों पर आँ ाल रखकर धुएँ की शिकायत कर दी।"[107]

यही भावात्मक शैली हमें 'दा यु' कहानी में भी देखने को मिलती है। "मदन को ागदीशबाबू के व्यवहार से गहरी ोट लगी। मैने ार से सिरदर्द का

---

[106] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.28
[107] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.82

बहाना कर वह घुटनों में सर दे कोठरी में सिसकियाँ भर-भर रोता रहा। घर-गाँव से दूर, ऐसी परिस्थिति में मदन का ागदीश बाबू के प्रति आत्मीयता-प्रदर्शन स्वाभाविक ही था। इसी कारण आ ा प्रवासी ीवन में पहली बार उसे लगा ैसे किसी ने उसे ई ाा की गोद से, बाबा की बाहों से और दीदी के आँ ाल की छाया से बलपूर्वक खीं ा लिया हो।"[108]

इस प्रकार शेखर ोशी ने अपनी कहानियों में भावात्मक शेली का प्रयोग किया है।

2.2.3.2 आलंकारिकता

शेखर ोशी अपनी कहानियों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग भी करते हैं। इन अलंकारों के प्रयोग से उन्होंने अपनी कहानियों को सुसि ात किया है। उनकी 'गाइड' कहानी का एक उदाहरण देखिए-"उनके ोहरे पर कुछ वैसी ही गंभीरता थी ैसी बिना पूर्व सू ाना के किसी गोष्ठी या मीटिंग का अध्यक्ष मनोनीत कर दिए ाने पर किसी अप्रस्तुत व्यक्ति की होती है।"[109]

इसी प्रकार 'निर्णायक' कहानी में अलंकार के प्रयोग से उन्होंने कथावस्तु को आकर्षक बनाया है। ैसे-"बॉस के ोहरे पर गहरा आत्मसंतोष का भाव था। एक डूबते हुए आदमी को ब ाकर किनारे पर ले आनेवाले कुशल तैराक के ोहरे पर ो परोपकार और वि ाय की गरिमा होती है, कुछ-कुछ वैसा ही उनके ोहरे पर भी दिखाई दे रहा था।"[110] और इसी प्रकार 'बंद दरावा ो-खुली खिड़कियाँ' शीर्षक कहानी में उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है-"सलवटों से भरा करता पाय ामा और यह सुसि ा त ड्राइंग रूम। लगता है

---

[108] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.12
[109] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.60
[110] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.65

ैसे ाँदी की एक बहुत ऐशट्रे मैं एक मैं हूँ-बीड़ी की अध ाले टुकड़े-सा एक कोने में रखा हुआ।"[111]

'स्वप्न देश की एक उदास शाम' नामक कहानी में भी अलंकारों का प्रयोग हुआ है। ैसे माँ के सम्मुख किसी ने उसके होनहार बालक की प्रशंसा कर दी हो और वह स्वयं भी सब कुछ भूलकर उसके गुणों का वर्णन करने लगे, इसी प्रकार ूल्हे में आग ालाता हुआ देबिया उत्साहपूर्वक अपना मत देने लगा-"यह तो कुछ भी नहीं, बाबू साहब, आप इस बैसाख- ोठ में आये हैं, अगर क्वार-कार्तिक में आप यहाँ आकर देखें तो दुनिया ही बदल ाती है।"[112]

2.2.3.3 प्रतीकात्मकता

शैली की यह विशेषता शेखर ोशी की कहानियों में सांकेतिक प्रसंगों के अंतर्गत देखी ा सकती है। उनकी 'किं करोमि ानार्दन, उस्ताद, निर्णायक, गोपुली बुबु' आदि कहानियों में इस प्रकार की शैलीगत विशेषता देखी ा सकती है। 'उस्ताद' कहानी में इस शैलीगत विशेषता का एक उदाहरण देखिए-"वह क्या कहना ाहते थे मैं नहीं सम ा, ऐसी बात नहीं थी। दूध के दाँत कब के टूट ुके थे। मैंने भी खुलकर ठहाका लगाया, "नहीं, उस्ताद ी, ऐसी बात नहीं है।"[113] यहाँ इस संदर्भ में लेखक 'मैं छोटा ब ा नहीं हूँ' यह कहना ाहता है। इस विषय को वह प्रतीकात्मक शैली में 'दूर्ध के दाँत कब के टूट ुके' का प्रयोग किया है। इसी प्रकार 'किं करोमि ानार्दन' नामक कहानी में प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग इस प्रकार हुआ है-"तीनों बहुओं का विवाहोत्सव

---

[111] कोसी का घटवार,शेखर ोशी-पृ.51
[112] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.156
[113] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.17

में ाने का निर्णय पत्थर की लकीर की तरह अटल है।"[114] यहाँ दृ.निश ाय को प्रतीकात्मक शैली में पत्थर की लकीर की तरह अटल प्रयोग के द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

2.2.3.4 प्रवाहात्मकता

शेखर ोशी की शैलीगत विशेषताओं में प्रवाहात्मकता का विशेष महत्व है। उनकी कहानियों में इसे सर्वत्र देखा ा सकता है। इससे कहानियों में स ावता के साथ-साथ विकास को भी बल मिलता है। 'सिनारियो' का एक उदाहरण देखिए-"आमाँ सरुली को 'सैप' के पास बिठाकर ुकी कमर लिये हुए फिर सीि याँ उतर गयी। दीये के मंदर प्रकाश में कुछ लिख-प. पाना संभव नहीं था। रवि अपना मन बहलाने के लिए सरुली से बतियाने लगा। अब तक सरुली की ि ाक मिट ुकी थी और वह वा ाल होकर अपनी प.ाई-लिखाई, घर-परिवार और गाँव-पड़ोस की बातों में रम गयी थी। काफी देर बाद ाब आमाँ लौटी तो वह थाली में भो ान लिए हुए थीं।"[115]

यही प्रवाहात्मक शैली हमें 'रंगरुट' कहानी में भी दिखाई देती है। "गाँव में रोग-व्याधि फैल ाए, सूखा पड़े या वर्षा-पाले की तबाही हो, लोग फूल-पाती, भेंट- ा.ावा या मुर्गा-नारियल लेकर ाऊ बाबा के थान पर पहुँ ा ाते। अपने पुरुषार्थ से ब.कर उनके ामत्कार पर भरोसा रहता था। और तभी रात में किसी-न-किसी पुण्यात्म को ाऊ बाबा सपने में दर्शन दे ाते और उस संकट का निदान बता ाते। ाऊ बाबा के ऐसे विश्वास पात्रों में गाँव के दो-तीन प्रमुख और समृद्ध के लोग ही अक्सर हुआ करते थे।"[116]

---

[114] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.39
[115] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.131
[116] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.137

2.2.3.5 व्यंग्यात्मकता

शेखर ोशी की कहानियों की शैलीगत विशेषताओं में व्यंग्यात्मकता भी दृष्टिगत होती है। उनकी यह विशेषता अधिकांशतः हास्य व्यंग्य प्रसंगों में देखी ा सकती है। इस संबधं में 'शुभो दीदी' कहानी का एक अंश देखिए- "कौन ाने लँगडी-लूली या कानी-भेंगी, कैसी है। अ छी लड़की होती, तो एक विशू बाबू ही तो नहीं रह गए थे।"[117] इस प्रकार की व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग विशू बाबू की पड़ोसी स्त्रियों के द्वारा किया गया है। उनके व्यंग्य का लक्ष्य विशू बाबू की पत्नी हैं। इसी कहीन में 'माँ' नामक पात्र पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं-"बहिना! गले साफ कर लो, इनकी ोठानी आएँगी, तो ये गीत तो गवायेंगी ही।"[118]

'प्रथम साक्षात्कार' कहानी में भी इस शैली का प्रयोग हुआ है। प्रफुल्ल स्वयं के प्रेम पत्र को देखकर ाया को खी ाने की ि ाद से अपने आप पर व्यंगय करते हुए कहता है-"कभी-कभी आदमी भी कैसी बेवकूफी करता है।"[119]

इस प्रकार की हास्य-व्यंग्य शैली का प्रयोग शेखर ोशी की अनेक कहानियों में देखने को मिलता है।

'विडुवा' कहानी में इस शैली का प्रयोग इस प्रकार हुआ है-"समधी की दावत में भरपेट पूड़ी-मिठाई खाने के लिए उपवास कर रहे होंगे।" इस प्रकार की व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग कहानी में बड़े ठाकुर के द्वारा तब किया ाता है ाब छोटे ठाकुर अपने विडिओं की ि ाद्द पर खाना नहीं खाते।

'टूटन' कहानी में त्रिलो ान के गाँव में रहने की यो ाना पर व्यंग्य करते हुए उनके ब ो इस प्रकार व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग करते हैं-"अम्मा, आप

---

[117] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.73
[118] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.73
[119] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.127

लोग एक गाय रख लेना। दूसरा कहता-अकेली गाय ही क्यों दो बैलों की भी तो ारूरत पड़ेगी-खेतों के लिए। तीसरा स्वर उठता, फसल काटने के मौके पर हम सब लोग भी गाँव ालेंगे और कटाई-मड़ाई करके अपने लिए भी लेते आएँगे। छोटे, ो खिलाड़ी किस्म का लड़का था अपने मतलब की बात ोड़ देता-"अम्मा हमारे लिए धीर ामा करती रहेंगी। हर बार एक कनस्तर शुद्ध घी लेकर आएँगे।"[120]

इस प्रकार शेखर ोशी की अनेक कहानियों में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग हम देख सकते हैं।

2.2.3.6 आं ालिकता

लोक कथात्मक पृष्ठभूमि पर लिखी गयी कहानियों में यह विशेषता विशेष रूप से पाई ाती है। इसमें किसी प्रदेश एवं स्थान विशेष का ित्रण होता है। यह विशेषता शेखर ोशी की अनेक कहानियों में देखी ा सकती है। 'मेरा पहाड़' संग्रह की सभी कहानियाँ आँ ालिक कहानियाँ ही हैं। उनके द्वारा लिखी गयी 'विस नि' कहानी का एक उदाहरण देखिए-"गाँव के सीमांत पर बहती वेगहीन नदी का रेंगता ाल। नदी किनारे घुटनों-घुटनों तक धोती लपेटे, नंगे बदन, कंधे पर अपसव्य यज्ञोपवीत डाले हुए तारी यांत्रिक ंग से पुरोहित ाी के आदेशानुसार पिण्डदान कर तिलां ालि देते-देते सिसकियाँ भरने लगा।"[121]

'स्वप्न देश की एक उदास शाम' शीर्षक कहानी में भी इस शैली को देखा ा सकता है। " ांगलात की सड़क के किनारे पहाड़ी रास्ते की ा.ाई पर ाड़ के पत्तों का छप्पर डालकर देबिया ने ााय की दुकान खोल ली थी। दो-

---

[120] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.91

[121] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.148

ाार बीड़ी के बण्डल, दियासलाई और ाना-गुड-मिसरी थैले में रखकर देबिया सुबह ही घर से ाला आता।"[122]

शेखर ोशी ने अपनी कहानियों में ि ास अं ाल को प्रस्तुत किया है, वह अल्मोड़ा पहाड़ी अं ाल है। उनकी सारी कहानियों में यही पहाड़ी अं ाल का ि ात्रण है।

2.2.3.7 रो ाकता

शेखर ोशी की कहानियों की शैलीगत विशेषताओं में इसे विशेष द ार्ा दिया ाा सकता है। उनकी इस विशेषता का, कहानियों में कहीं भी अभाव नहीं है। इस संबंध में 'शुभो दीदी' कहानी को देख सकते हैं-"सहसा शुभा दी ने धीमी आवा ा में माँ को पुकारा। माँ दौड़कर उसके पास गयी। शुभो दी ने आँखें खोलकर धीमे से स्वर में न ाने क्या कहा, हम सम ा नहीं पाए। पर माँ ने नव ाात शिशु को अपनी बाँहों में लेकर शुभो दी के आगे कर दिया। बड़ी व्यग्रता से शुभो दी ने शिशु के सिर पर हाथ फेरा। गहरे भूरे बालों को देखकर ैसे उसे अपार संतोष हुआ, उस क्षण उसकी आँखों में अनोखी ामक आ गई थी। सभी से सुना, शुभो दी कह रही थी-"सन्तु, सफेद नहीं काले बाल।" शुभो दी ने ये ही शब्द अंतिम बार कहे थे।

माँ उस दिन फूट-फूट कर रोई थी। उसकी लक्ष्मी दूसरी बार उनसे विदा हो गई थी।"[123]

उपर्युक्त विवे ान के पश ाात हम आसानी से कह सकते हैं कि शेखर ोशी की कहानियों की भाषा शैली में ाो विविधता है, वह उन्हें कहीनकार के रूप में श्रेष्ठता ही प्रधन करती है। शेखर ोशी की भाषा में वह शक्ति है ाो

---

[122] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.155

[123] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.77

पाठक के अंतर्मन को क ोटती हुई गंतव्य स्थान तक पहुँ ाती है। शेखर ोशी की कहानियाँ सह ा और ठंडी भाषा के माध्यम से हमारे समक्ष ि ास यथार्थ का उद्घाटन करती हैं, उसके पीछे समकालीन ान- ीवन की बहुविध विडंबनाओं को महसूस किया ा सकता है। उनके द्वारा र ित कहानियों की शैली सशक्त एवं आकर्षक है। उन्होंने विविध शैलियों का कहानियों में प्रयोग किया है। उनकी कहानियों में प्रतीकात्मकता, व्यंग्यात्मकता, ि त्रात्मकता पाठकों को अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित करते हैं। इनकी शैलीगत विशेषताओं में भावात्मकता, आलंकारिकता, प्रतीकात्मकता, प्रवाहात्मकता, व्यंग्यात्मकता, आं ालिकता, रो ाकता आदि प्रमुख हैं।

* * *